फरवरी २०१०

दादावाणी

मूल्य रु.१०

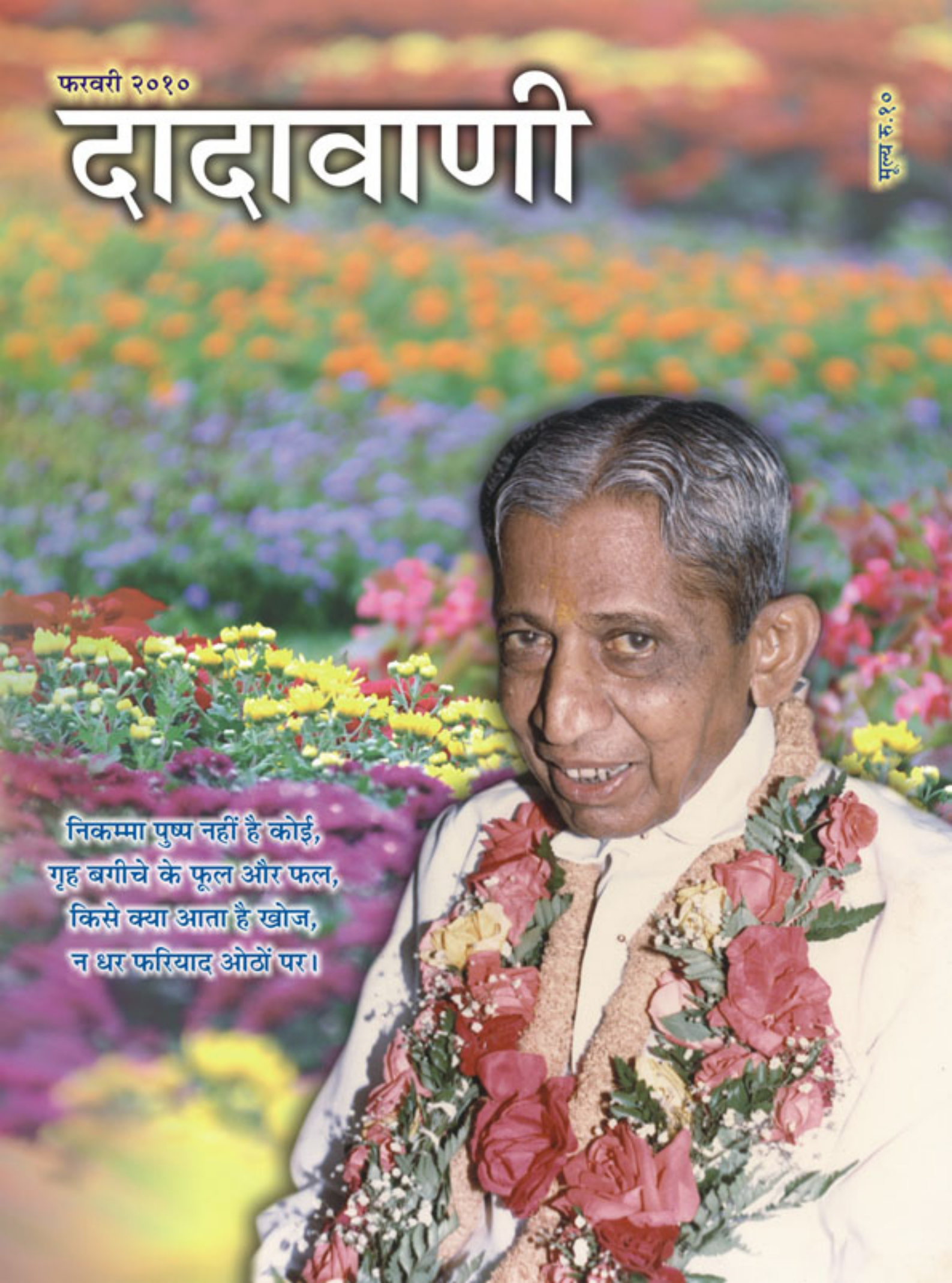

निकम्मा पुष्प नहीं है कोई,
गृह बगीचे के फूल और फल,
किसे क्या आता है खोज,
न धर फरियाद ओठों पर।

तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्ष : ५, अंक : ४
अखंड क्रमांक : ५२
फरवरी २०१०

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९) ३९८३०१००
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
अहमदाबाद : (079) 27540408
वडोदरा : (0265) 2414142
मुंबई : 9323528901
राजकोट त्रिमंदिर :
9924343478, 9274111393
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 07956476253
Website : www.dadashri.org
hindi.dadabhagwan.org

Publisher, Owner & Printed by :
Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printer/Press :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल का
भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के
नाम से भेजे।

दादावाणी

जानो कला, निष्क्लेश जीवन जीने की

संपादकीय

मनुष्य के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत घटनेवाली घटनाओं की एक श्रृंखला बन जाती है। उन घटनाओं में होनेवाली व्यावहारिक क्रियाओं का आशय तो सुखप्राप्ति का ही होता है, लेकिन कभी-कभी कोई ऐसी भूल हो जाती है कि जिससे जीवन में क्लेश-कलह पैदा होते हैं और जीवन दु:खमय हो जाता है। जीवन जीने का आनंद लुप्त हो जाता है। इस काल में सुख के इतने साधन, अच्छा खाना-पीना, इतनी सारी सुविधाओं के बावजूद क्लेश और दु:ख उत्पन्न होने का क्या कारण हो सकता है? तब कहे, केवल समझदारी का अभाव। जीवन में क्या हितकारी है और क्या अहितकारी है, इसका विचार नहीं करना चाहिए क्या? बुद्धिमानी और समझदारी से काम लिया जाए तो घर में या बाहर कहीं पर भी क्लेश नहीं हो सकता। घर में एक साथ रहनेवालों के बीच तो क्लेश कतई नहीं रहना चाहिए।

यह जगत् अपनी समझदारी से नहीं मगर ज्ञानी पुरुष की दृष्टि से समझना ज़रूरी है। ज्ञानी पुरुष से दीर्घ दृष्टि प्राप्त होने पर जगत् वास्तविक रूप से दिखाई देता है और फिर क्लेश-कलह नहीं होते हैं, तोड़फोड़ नहीं होती, मनभेद-मतभेद नहीं होते हैं और सबका हित होता है।

परम पूज्य दादा भगवान की ज्ञानदृष्टि से यह बात सरलता से समझ में आए ऐसी है कि उदयकर्म क्लेशवाला नहीं होता है लेकिन अज्ञानतावश क्लेश पैदा होता है। जीवन में दु:ख का कारण नासमझी है। खुद का बरताव कैसा होना चाहिए यह मालूम नहीं है इसलिए टकराव हो जाते हैं और क्लेश हो जाता है। सुख के लिए भटकते हैं मगर पाते हैं दु:ख। यदि जीवन जीने की कला आती तो दु:ख नहीं पाते और दु:ख को दूर करते। अर्थात् यह कला जाननी ज़रूरी है, जो ज्ञानी के ज्ञान के द्वारा साहजिक रूप से जान सकें ऐसी है। मतभेद टालकर क्लेश मिटा सके ऐसी जागृति तो प्रकृति गुण से भी आ सकती है। क्लेश-कषाय होना वह हमारी कमज़ोरी है, इस कमज़ोरी से मुक्त होने का पुरुषार्थ यदि इस मनुष्य जन्म में नहीं करेंगे तो कब करेंगे? क्लेश रहित जीवन जीने की कुशलता तो आनी चाहिए न? क्लेश रहित जीवन व्यवहार से ही सच्चे धर्म का प्रारंभ होता है, जो मोक्ष की बुनियाद का प्रथम चरण है। क्लेश रहित होने पर समझना कि अब हमारा मोक्ष का स्टेशन करीब ही है।

ज्ञानप्राप्ति के पश्चात् हमारे जीवन का ध्येय मोक्षप्राप्ति का है। इस ध्येय की पूर्ति के लिए निष्क्लेश जीवन बसर करते-करते, मन-वचन-काया से किसी को किंचित् मात्र दु:ख नहीं हो और प्रेम स्वरूप कैसे बन सके इसकी सही समझदारी यहाँ संकलित दादाश्री की सत्संग अमृतवाणी से प्राप्त होती है। जिसे जीवन व्यवहार में कार्यान्वित करके निष्क्लेश जीवन जीने की कला आत्मसात् करके, फाइलों का समभाव से निपटारा करते हुए हमारे ध्येय की सिद्धि के पुरुषार्थ में लग जाएँ, इसी अभ्यर्थना के साथ....

दीपक देसाई ...

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

जानो कला, निष्क्लेश जीवन जीने की

रक्षण में हो उसका नहीं करते भक्षण

प्रश्नकर्ता : मेरी पत्नी के साथ मेरी बिलकुल बनती नहीं है। चाहे कितनी भी निर्दोष बात करूँ, मेरी बात सही हो तब भी वह उलटा लेती है। बाह्य जीवन संघर्ष तो चलता है मगर यह व्यक्ति संघर्ष क्या होता होगा?

दादाश्री : ऐसा है, मनुष्य अपने मातहत मनुष्य को इतना अधिक कुचलता है, इतना अधिक कुचलता है कि कुछ बाकी ही नहीं रखता है।

जो हमारे रक्षण में हो उसका भक्षण कैसे कर सकते हैं? जो अपने हाथ नीचे आया उसका तो रक्षण करना, यही सबसे बड़ा ध्येय होना चाहिए। उसका गुनाह हुआ हो तब भी उसका रक्षण करना चाहिए। कुछ विदेशी सैनिक अभी यहाँ कैदी हैं, फिर भी सरकार उनको कैसा रक्षण देती है! तब ये तो घर के ही हैं न? यह तो बाहरवालों के पास भीगी बिल्ली बन जाएँ, वहाँ झगड़ा नहीं करते और घर में सबकुछ करें। खुद की सत्ता तले हो उन्हें कुचलते रहे और मालिक को 'साहब, साहब' करे। अभी कोई पुलिसवाला आकर धमकाए तो 'साहब, साहब' करे और घर पर जब 'पत्नी' सच्ची बात कहे तो वह सहन नहीं होती और उसे धमकाए। 'मेरी चाय के कप में चींटी कहाँ से आई?' ऐसा करके घरवालों को थरथराए। उसके बजाय शांति से चींटी निकाल ले न। घरवालों को धमकाए और पुलिसवालों से थरथराए। अब यह तो घोर अन्याय कहलाए। हमें यह शोभा नहीं देता। पत्नी तो खुद की भागीदार कहलाती है। भागीदार के साथ क्लेश? यदि ऐसा क्लेश होता हो तो कोई रास्ता निकालना चाहिए, समझाना चाहिए। घर में रहना है तो क्लेश क्योंकर?

'समयानुसार सावधान'

सभी की हाज़िरी में, सूर्यनारायण की साक्षी में, पुरोहित की साक्षी में शादी रचाई तब पुरोहित ने सावधान किया कि 'समयानुसार सावधान'। तब क्या तुझे सावधान होना भी नहीं आता है? समयानुसार सावधान होना चाहिए। पुरोहित पुकारता है 'समयानुसार सावधान', इसे पुरोहित समझे, शादी करनेवाला क्या समझे? सावधान का मतलब क्या है? तब कहे, पत्नी उग्र हो गई हो तब तू शांत हो जाना, सावधान हो जाना। 'समयानुसार सावधान', यानी जैसा समय आया ऐसे सावधान रहना ज़रूरी। तभी संसार में शादी कर सके। वह यदि उग्र हो गई हो और हम भी उग्र हो जाएँ तो वह असावधानी कहलाए। वह उछले तब हमें ठंडा हो जाना है। क्या सावधान रहने की ज़रूरत नहीं है? इसलिए मैं सावधान रहा था। दरार होने नहीं देता। दरार होने को आई कि तुरंत वेल्डिंग सेट चालू। मगर लोगों को तो दाल में ज़रा नमक ज्यादा पड़ गया हो तो भी कलह करे, ऐसा नहीं सोचते कि हम यहाँ ज़रा एडजस्ट हो जाएँ। तब मुख्य बात यही है कि आज दाल में नमक ज़रा ज्यादा पड़ गया है, इसलिए हमारे लिए समय आया है, मतलब सावधान हो

जाना और दाल ज़रा कम खाना, मगर शोर नहीं मचाना। समयानुसार सावधान हो जाना इसके लिए कहते हैं। मगर समयानुसार बरतते नहीं है न!

क्या आर्यों को सोहे, ऐसा अनाड़ी बरताव?

घर में क्लेश नहीं होना चाहिए। किसी के घर में क्लेश होता होगा कहीं?

प्रश्नकर्ता : क्लेश तो होता ही है न!

दादाश्री : हमारे आर्य लोगों के घर में तो होता नहीं है, अनार्य के वहाँ होता है। हम तो आर्य लोग। हमारे यहाँ क्लेश क्योंकर होगा?

प्रश्नकर्ता : मगर यह हक़ीक़त है न कि क्लेश होता है।

दादाश्री : नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : नहीं होना चाहिए वह सब बात बराबर है, मगर होता है उसका क्या?

दादाश्री : उतनी नासमझी निकाल देंगे तो क्लेश निकल जाए ऐसा है।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : और यह तो एक व्यक्ति क्लेश करे तो वह अकेला ही दु:खी। इसमें सुननेवाले को दु:ख हुआ या नहीं हुआ? दु:ख होना वह खुद की नासमझी है।

प्रश्नकर्ता : क्लेश नहीं करना हो तब भी हो जाता है, तो इसे कौन पहुँच पाए?

दादाश्री : सोना पहुँच पाए। सोना पहनाए इसलिए ठंडे हो जाएँ। साथ रहना और फिर बिना क्लेश के रहना, वह जीवन कहलाए। क्लेश नहीं होना चाहिए। घर में किसी को दु:ख नहीं होना चाहिए। रोज़ पति से पूछना कि 'आपको दु:ख होता हो तो मुझे कहिए।' वैसे ही, वह भी तुझे पूछे।

संस्कारी कौन कहलाए?

संस्कारी कौन कहलाए? घर में क्लेश हो वह संस्कारी कहलाए या क्लेश नहीं हो वह कहलाए?

प्रश्नकर्ता : क्लेश नहीं हो वह कहलाए।

दादाश्री : तब फिर ऐसा क्यों? हम ठहरे संस्कारी। शादी करने जाएँ तो लोग दहेज़ देते हैं। किस लिए दहेज़ देते हैं? घर में पत्नी को मारने के लिए देते होंगे? पहले तो दहेज़ किस लिए देते थे, कि इस घर में क्लेश का नाम तक नहीं है! घर में कोई क्लेश नहीं, किसी को दु:ख नहीं पहुँचाते, वह स्थिति हमारी होनी चाहिए न?

किसी जीव को दु:ख नहीं होना चाहिए, किसी को भय नहीं लगने देना। आज तो घर में पत्नी हमारे जाने से पहले हमसे डरती हो, तो उसे डराकर हमें क्या सुख मिलनेवाला है।

सुख देने से सुख मिले

प्रश्नकर्ता : मुख्य वस्तु यह है कि घर में शांति रहनी चाहिए।

दादाश्री : मगर शांति रहेगी कैसे? यदि बेटी का नाम शांति रखें तब भी शांति नहीं रहती। उसके लिए तो धर्म समझना चाहिए। घर के सभी लोगों को कहना चाहिए कि, 'हम सभी घर के सदस्य हैं। कोई किसी का बैरी नहीं है। किसी का किसी से झगड़ा नहीं है। इसलिए हमें मतभेद करने की कोई ज़रूरत नहीं है। बाँटकर शांति से खाइए, आनंद कीजिए, मज़े कीजिए।' ऐसे हमें सोच-समझकर सब करना चाहिए। घर के लोगों के साथ कभी क्लेश नहीं करना चाहिए। जब उसी कोठरी में पड़े रहना है तो वहाँ क्लेश किस काम का? किसी को परेशान करके खुद सुखी हो ऐसा कभी संभव नहीं

है और हमें तो सुख पहुँचाकर सुख लेना है। हम घरवालों को सुख देंगे तभी सुख मिलेगा।

स्वभाव की ओर जाना उसका नाम धर्म

यह जगत् क्लेश करने योग्य है ही नहीं। यह तो कितने चिंता-संताप। ज़रा-सा भी मतभेद टलता नहीं है, फिर भी मन में समझते हैं कि 'मैंने कितना धर्म किया'! अरे! क्या घर में से मतभेद टला? कम हुआ है? चिंता कम हुई? शांति हुई? तब कहे, 'नहीं। लेकिन मैंने धर्म तो किया ही न?' अरे! किस को धर्म कहता है तू? धर्म तो भीतर की शांति प्रदान करे, आधि-व्याधि-परेशानी नहीं होती, उसका नाम धर्म। स्वभाव की ओर जाना उसका नाम धर्म। और यह तो क्लेश परिणाम अधिकाधिक हुआ करते हैं!

जिस घर में क्लेश नहीं होता वहाँ भगवान हाज़िर रहते हैं, क्लेश हुआ कि भगवान चले जाएँ। और भगवान के जाने पर फिर लोग कहेंगे, 'धंधे में कोई बरकत आती नहीं है।' अरे! भगवान गए इसलिए बरकत नहीं आती है। भगवान जब तक होते हैं तब तक बरकत आदि सब आता रहता है। क्या आपको क्लेश पसंद है?

प्रश्नकर्ता : नहीं जी।

समझिए क्या हितकारी, क्या अहितकारी

जहाँ कलह है, क्लेश है, उस घर की शोभा नहीं होती। और कलह करने की वज़ह घर में होती ही नहीं है। हमारे भारतियों को तो होती ही नहीं है। लेकिन ये नासमझ लोग क्या करें? मेडनेस (पागलपन) को लेकर कलह ही किया करते हैं।

प्रश्नकर्ता : जैसे कि कुछ लोगों का स्वभाव ही ऐसा होता है कलह करने का, तब क्या करना?

दादाश्री : इसलिए मैं कहता हूँ न, कि दु:ख नहीं है लेकिन दु:ख खड़े करते हैं, इन्वाइट (निमंत्रित) करते हैं। किसी को दु:ख ही नहीं है किसी प्रकार का। खाने-पीने को सबकुछ है, कपड़े-लत्ते हैं, रहने का फ्री (मुफ्त) है, सारे साधन हैं, लेकिन दु:ख खड़े करते हैं। बहुत कम प्रतिशत सीधा माल है। शेष 'रबिश मटिरिअल' (कूड़े जैसा माल) है सब। रबिश होने के बावजूद विचारशील है, सयानेपनवाला है। उनकी जो बुद्धि है वह व्यभिचारिणी बुद्धि है। थोड़ी-सी बुद्धि डिवेलॅप (विकसित) हुई है वह अव्यभिचारिणी हो सके ऐसी है। अच्छे टच (संपर्क) में आने पर फेरफार हो जाए। संस्कार की ज़रूरत है। बिलकुल जड़ नहीं है वह। चाहे खोटी-खराब हो, मगर बुद्धि पैदा हुई है। पहले तो खराब भी नहीं थी। खराब हो तो उसे संस्कारी कर सकें। क्योंकि बुद्धि डिवेलॅप हुई होती है न, इसलिए।

कृष्ण भगवान ने कहा है कि दो प्रकार की बुद्धि है, अव्यभिचारिणी और व्यभिचारिणी। व्यभिचारिणी मतलब दु:ख ही देगी। और अव्यभिचारिणी बुद्धि सुख ही देती है, दु:ख में से सुख खोज निकाले। और व्यभिचारिणी बुद्धि तो जैसे, बासमती चावल में भी कंकड़ डालकर खाएँ। यहाँ अमरीका में खाने को कितना अच्छा और शुद्ध मिले, कितना अच्छा खाना। ज़िंदगी सरल है। फिर भी जीवन जीना नहीं आता है इसलिए मार खाते हैं फिर।

खुद के लिए क्या हितकारी है इतना तो विचार करना चाहिए न? शादी हुई उस दिन का आनंद याद करें वह हितकारी कहलाए या वैधव्य के दिन का मातम याद करें वह हितकारी कहलाए? हमने शादी की उस दिन का आनंद याद करें तो वह हमारे लिए हितकारी है। वैधव्य के मातम का क्या करना है? दो व्यक्ति शादी के लिए बैठते हैं तब से दो में से एक को वैधव्य तो आनेवाला ही है। यह शादी का सौदा ही ऐसा किया है और उसमें फिर

क्लेश किस बात का? जहाँ सौदा ही ऐसा हो फिर वहाँ कलह किस बात का? दो में से एक को वैधव्य नहीं आनेवाला क्या?

भटकन का कारण, बैर

इस जगत् ने कभी न्याय ही देखा नहीं है। नासमझी को लेकर यह सब है। यदि बुद्धि की समझदारी रही न तब भी बहुत हो गया। बुद्धि यदि विकसित हुई हो, समझदारीवाली की गई हो तो कभी कोई झगड़ा होता ही नहीं। अब झगड़ा करने से टूटे हुए कप-रकाबी जुड़ तो नहीं जाते न? केवल संतोष लेते हैं उतना ही न? और क्लेश होता है सो अलग, मन में क्लेश हो जाए सो अलग। यानी इस व्यापार में एक तो कप-रकाबी गँवाए वह घाटा और दूसरे यह क्लेश होने का घाटा और तीसरे नौकर के साथ बैर बाँधा वह घाटा। नौकर बैर बाँधे कि, 'मैं गरीब हूँ, इसलिए ये मुझे इस समय ऐसा सुनाते हैं न?'

मगर वह बैर छोड़नेवाला नहीं है और भगवान ने भी कहा है कि, 'किसी के साथ बैर मत बाँधना। बाँध सको तो प्रेम बाँधना, मगर बैर मत बाँधना।' क्योंकि प्रेम बँधेगा तो वह प्रेम ही अपने आप बैर को खतम कर डालेगा। प्रेम तो बैर की क़बर खोद डाले ऐसा है। बैर से तो बैर बढ़ता ही रहता है, निरंतर बढ़ता ही रहता है। बैर को लेकर यह भटकन है सारी। ये मनुष्य क्यों भटक रहे हैं? क्या तीर्थंकरों से भेंट नहीं हुई? तब कहे, 'तीर्थंकरों से तो भेंट हुई थी, उनको सुना था, देशना तक सुनी, मगर कुछ फायदा नहीं हुआ।'

क्या-क्या अड़चनें आती हैं? कहाँ-कहाँ विरोध होते हैं? उन विरोधों को तोड़ दें। विरोध होना यह संकुचित दृष्टि है। 'ज्ञानी पुरुष' 'लोंग साइट' (दीर्घ दृष्टि) प्रदान करते हैं, उस 'लोंग साइट' के आधार पर सब 'जैसा है वैसा' दिखाई देता है।

क्या क्लेश से प्रारब्ध बदल सके?

प्रश्नकर्ता : क्लेश नहीं हो इसके लिए क्या करना? उसका रास्ता क्या है?

दादाश्री : किस-किस बाबत को लेकर क्लेश होता है? यह मुझे बताइए तो मैं आपको तुरंत उसकी दवाई बता दूँगा।

प्रश्नकर्ता : पैसों के लिए होता है, बच्चों को लेकर होता है, सबके लिए होता है। छोटी-छोटी बातों को लेकर होता रहता है।

दादाश्री : पैसों की बाबत में क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : बचते नहीं है, सब खर्च हो जाते हैं।

दादाश्री : तो उसमें पति का क्या कसूर है?

प्रश्नकर्ता : कोई कसूर नहीं है। लेकिन उस बात को लेकर झगड़ा हो जाता है कभी-कभी।

दादाश्री : मतलब, क्लेश तो करना ही नहीं। दो सौ डॉलर गँवाकर आए तब भी क्लेश नहीं करना। क्योंकि क्लेश की क़ीमत चार सौ की होती है। दो सौ डॉलर खो जाएँ उससे डबल क़ीमत का क्लेश होता है। यानी, चार सौ डॉलर का क्लेश करना उसके बजाय दो सौ डॉलर गए सो गए। फिर क्लेश मत करना। घटना-बढ़ना वह तो प्रारब्ध के अधीन है।

क्लेश करने से पैसों में वृद्धि नहीं होती है। वह तो पुण्य जागे, तो पैसों की वृद्धि होने में देर नहीं लगती। यानी पैसे ज्यादा खर्च हो जाते हों तो किच-किच नहीं करना। क्योंकि जो खर्च हो गए वे तो आखिर गए, लेकिन यदि क्लेश करें तब तो पचास रुपये खर्च हुए हों उसके सामने सौ रुपयों का क्लेश हो जाए। मतलब क्लेश तो करना ही नहीं चाहिए।

क्लेश-कलह के फायदे क्या?

एक तो घर में क्लेश नहीं होना चाहिए और होता हो तो उसे रोक लेना चाहिए। ज़रा हो जाने को हो, हमें लगे कि अभी शोले भड़केंगे, उससे पहले थोड़ा पानी छिड़ककर ठंडा कर देना चाहिए। पहले की तरह क्लेशवाला जीवन जीएँ उसमें क्या फायदा? उसका मतलब ही क्या है? क्लेशवाला जीवन नहीं होना चाहिए न? बाँटकर क्या ले जाना है? घर में साथ-साथ खाना-पीना फिर क्लेश किस काम का? दूसरा कोई यदि आपके पति के बारे में कुछ कहे तो गुस्सा आ जाए 'कि मेरे पति के बारे में क्यों ऐसा बोलते हैं' और खुद पति से कहे कि 'आप ऐसे हो और वैसे हो', ऐसा सब नहीं होना चाहिए। पति को भी ऐसा नहीं करना चाहिए। आप दोनों के बीच क्लेश रहा तो उसका असर बच्चों पर होगा। नादान बच्चे, उन पर असर पड़ता है सारा। मतलब क्लेश जाना चाहिए, क्लेश जाने पर घर के बच्चे भी सुधर जाते हैं।

क्लेश करना बगीचे में जाकर

यदि आपको क्लेश करना ही है तो बाहर जाकर करके आना। घर में यदि क्लेश करना हो तो उस दिन बगीचे में जाकर वहाँ बहुत लड़कर घर पर आ जाना। लेकिन घर में 'अपने कमरे में नहीं लड़ना' ऐसा नियम बना लेना। कभी किसी दिन हमें लड़ने का शौक उभर आए तो पत्नी से कहना, 'चलिए आज बगीचे में चलते हैं, वहाँ भरपेट नाश्ता करेंगे और खूब लड़ेंगे।' फिर लोगों को बीच में पड़ना पड़े इतना लड़ना। मगर घर में लड़ाई मत करना।

क़ीमत ज्यादा, व्यक्ति की या वस्तु की?

यदि सोफे को लेकर झगड़ा होता हो तो सोफे को बाहर फेंक दीजिए। दो सौ, तीन सौ रुपये के सोफे के लिए कोई झगड़ा करता है क्या? जिसने तोड़ दिया उसके प्रति द्वेष होता है। अरे! फेंक दीजिए। जो वस्तु घर में टँटा करवाए, उस वस्तु को फेंक आइए बाहर। जिस घर में क्लेश नहीं होता वहाँ भगवान हाज़िर रहते हैं। फोटो में भगवान नहीं हैं, मगर जहाँ क्लेश नहीं होता वहाँ हाज़िर रहते हैं। तब क्या हम सोफे के लिए क्लेश करें? फेंक आइए बाहर।

जितना मानने में आया उतनी श्रद्धा बैठती है, उतना वह फलदायी होता है, हैल्प करता है। जो श्रद्धा में नहीं आया वह हैल्प नहीं करता। मतलब, समझकर चलें तो हमारा जीवन सुखी होता है और दूसरे भी सुखी होते हैं। यानी यह जगत् समझने जैसा है! कई बाबतों में समझने जैसा है। और वह भी ज्ञानी पुरुष समझाएँ, उनको कुछ लेना-देना नहीं होता, इसलिए वे समझाएँ कि 'यह हमारे हित का है', तब घर में क्लेश कम होता है, तोड़-फोड़ कम होती है।

क्लेश का कारण, अज्ञानता

प्रश्नकर्ता : क्लेश होने का मूल कारण क्या है?

दादाश्री : भयंकर अज्ञानता! मनुष्य को संसार में जीना नहीं आता, बेटे का बाप होना नहीं आता, पत्नी का पति होना नहीं आता। जीवन जीने की कला ही नहीं आती है! यह तो सुख होने पर भी सुख नहीं भोग सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या कलह खड़ा होने का कारण स्वभाव का मेल नहीं होना है?

दादाश्री : अज्ञानता है इसलिए। संसार उसीका नाम, कि किसी का किसी से स्वभाव मिलता ही नहीं। यदि यह 'ज्ञान' मिला तो फिर एक ही रास्ता है, 'एडजस्ट एवरीव्हेर।'

खुद में से क्लेश को निकाल दीजिए। जिसके

घर में क्लेश होता है वहाँ से फिर मनुष्यपन चला जाता है। यानी यों तो बड़े पुण्य से मनुष्यपन (मनुष्य जन्म) मिलता है, वह भी हिन्दुस्तान का मनुष्यपन और आपको तो यहाँ (अमरीका में) रोज़ाना शुद्ध ही मिलता है, खोजने पर भी मिलावटवाला नहीं मिलता, कितने पुण्यशाली हैं आप!

क्लेश होना वह अज्ञानाधीन

प्रश्नकर्ता : क्लेश होना उदयकर्म के अधीन होगा?

दादाश्री : नहीं, क्लेश अज्ञान से पैदा होता है। क्लेश खड़ा होने पर नये कर्मबीज पड़ते हैं। उदयकर्म क्लेशवाला नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : उदयकर्म क्लेशवाला नहीं होता?

दादाश्री : वह हो ही नहीं सकता न। अज्ञानता से, खुद वहाँ कैसे बरतना है यह नहीं जानने की वज़ह से क्लेश हो जाता है। मेरा कोई परम मित्र हो, और उसके मर जाने की खबर आज यहाँ आकर कोई मुझे देता है, तब तुरंत मुझे क्या असर होगा? इस ज्ञान से उसका निबेड़ा आ जाएगा, इसलिए फिर क्लेश होने का कोई कारण ही नहीं रहा न। यह तो अज्ञानतावश घबराते हैं कि 'मेरा दोस्त मर गया' और फिर क्लेश होने लगता है। क्लेश मतलब अज्ञानता। अज्ञानता से सारा क्लेश खड़ा है। अज्ञानता के जाने से सारा क्लेश दूर हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : मतलब क्लेश उत्पन्न होने से पहले ही हमें उदयकर्म को देख लेना चाहिए?

दादाश्री : देख लेने का सवाल नहीं है। भीतर जो है, उसे, 'वह क्या है' यह जान लेना चाहिए। मैं कौन हूँ? यह सब क्या है? यह जान लेना चाहिए। उदाहरण के तौर पर, हमारे यहाँ एक मटकी हो, उस मटकी को मुन्ना फोड़ देता है, तब हमारे घर में कोई क्लेश नहीं करता और जब एक काँच का बर्तन मुन्ने ने तोड़ दिया, तब? पति पत्नी से कहेगा कि 'तू संभालती नहीं है मुन्ने को।' तब मुए! मटकी फूटी तब क्यों नहीं बोला? क्योंकि डिवेल्यु थी, उसकी कोई क़ीमत ही नहीं थी। क़ीमत नहीं हो तब हम क्लेश नहीं करते और क़ीमतवाले के लिए ही हम क्लेश करते हैं न! वस्तुएँ तो दोनों ही उदयकर्म के अधीन ही टूटती हैं। मगर देखिए, मटकी के लिए क्लेश नहीं करते हैं, क्या कारण है इसका? मतलब क्लेश उदयकर्म के अधीन नहीं है, वह अज्ञानता के अधीन है।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, अज्ञानता के अधीन है लेकिन क्लेश होना या ऐसी कोई प्रक्रिया होना क्या वह मानसिक प्रक्रिया नहीं है?

दादाश्री : क्लेश मानसिक है मगर अज्ञान के अधीन है। जैसे कि, एक मनुष्य ने दो हजार रुपये खो दिए तो उसको मानसिक चिंता-परेशानी होती है। लेकिन दूसरे ने खो दिए तो वह मनुष्य कहेगा, 'मेरे कर्म का ऐसा उदय होगा, इसलिए उसके मुताबिक हुआ।' यानी ज्ञान होने पर, समझदारी होने पर, ऐसे निपटारा करे। वर्ना क्लेश, वह पूर्व जन्म के उदयकर्म का क्लेश नहीं होता है। क्लेश तो अज्ञानता का फल है।

दु:ख का कारण, नासमझी

कुछ लोगों को दो हजार गँवाने पर भी कोई असर नहीं होता, ऐसा होता है या नहीं होता? कोई दु:ख उदयकर्म के अधीन होता नहीं है। सारे दु:ख हमारी अज्ञानता के हैं।

कुछ लोगों ने बीमा नहीं करवाया हो, फिर भी उनका गोडाउन जल जाए तब वे शांत रह सकते हैं, अंदर से भी शांत और बाहर भी शांत, दोनों तरह से शांत। और कुछ लोग तो अंदर भी दु:खी और बाहर भी दु:ख दिखलाएँ। वह सब अज्ञानता और

नासमझी। वह गोडाउन तो सुलगनेवाला ही था। उसमें नया है ही नहीं। फिर तू सिर पटक-पटककर मर जाए तब भी उसमें फेरफार होनेवाला नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मतलब किसी भी वस्तु के परिणाम को अच्छी तरह लेना चाहिए, ऐसा।

दादाश्री : हाँ, पॉज़िटिव लेना, मगर वह तो 'ज्ञान' होने पर पॉज़िटिव ले सके, नहीं तो फिर बुद्धि तो नेगेटिव ही दिखाए। यह सारा जगत् दु:खी है। मछली छटपटाए ऐसे छटपटा रहा है। इसे जीवन कैसे कहा जाए?

जीवन जीने की कला तो जानिए

जीवन जीने की कला जानने की ज़रूरत है। जीवन जीने की कला तो होती है न? सभी को मोक्ष नहीं होता, मगर जीवन जीने की कला तो होनी ही चाहिए न? भले ही मोह करें मगर मोह के उपरांत जीवन जीने की कला तो जानिए, कि कैसे जीवन जीना है? सुख के लिए भटकते हैं न? तो सुख में क्लेश होता है कहीं? क्लेश तो उलटे सुख में भी दु:ख लाता है। भटकते हैं सुख के लिए और लाते हैं दु:ख। जीवन जीने की कला आती हो तो भी दु:ख नहीं लाएँ, दु:ख हो तो उसे भी बाहर कर दें।

हमें तो वास्तव में क्रोध-मान-माया-लोभ जाएँ और मतभेद कम हो ऐसा चाहिए। हमें यहाँ पूर्णता करनी है, प्रकाश करना है। यहाँ कब तक अंधेरे में रहना? क्रोध-मान-माया-लोभ की निर्बलताएँ, और मतभेद से आप परिचित हैं न?

प्रश्नकर्ता : बहुत।

दादाश्री : कहाँ देखे हैं? कॉर्ट में?

प्रश्नकर्ता : घर पर, कॉर्ट में, सब जगह।

दादाश्री : घर में तो क्या होंगे? घर में तो सिर्फ आप तीन सदस्य, वहाँ मतभेद किस लिए? दो-चार बेटियाँ या ऐसा-वैसा तो कुछ है नहीं। आप तीन लोग, फिर उसमें मतभेद कैसा?

प्रश्नकर्ता : मगर तीन लोगों में ही कई मतभेद हैं।

दादाश्री : तीन में ही? ऐसा?

प्रश्नकर्ता : यदि जीवन में कॉन्फ्लिक्ट (टकराव) नहीं हो तो ज़िन्दगी का मज़ा नहीं आता न!

दादाश्री : अच्छा! मज़ा उसका आता है! तब तो फिर रोज़ाना करते रहिए न! यह किस ने खोजबीन की है? किस उपजाऊ दिमाग़ की खोजबीन है यह? तब तो फिर रोज़ मतभेद होने चाहिए, कॉन्फ्लिक्ट (संघर्ष) के मज़े लेने हो, तो।

प्रश्नकर्ता : वह तो नहीं भाए।

दादाश्री : ऐसा कहकर खुद का बचाव किया है लोगों ने।

मतभेद सस्ता होता है या महँगा? कम मात्रा में या अधिक मात्रा में?

प्रश्नकर्ता : कम मात्रा में भी होता है और अधिक मात्रा में भी होता है।

दादाश्री : कभी दिवाली और कभी किसी दिन होली, मज़ा आता है उसमें? या मज़ा किरकिरा हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : मज़ा किरकिरा हो जाता है।

दादाश्री : ऐसे तो मज़ा किरकिरा ही हो जाए न! घर में तो पति-पत्नी दो ही होते हैं, लेकिन यदि फिर भी मज़ा किरकिरा हो जाए तो पति काहे के? पति-पत्नी दोनों अलग-अलग गाँव में रहते हों तो मज़ा किरकिरा हो जाए, लेकिन साथ रहते हों और मज़ा किरकिरा हो जाए, वह कैसा?

प्रश्नकर्ता : कभी किसी समय ऐसा होता है। सांसारिक जीवन है इसलिए हो जाए।

दादाश्री : मतलब, दिवाली के दिन की तरह क्या साल में एक बार ही होता है ऐसा? तब तो उत्सव मनाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हरएक के घर में ऐसा तो रोज़ ही होता है न!

दादाश्री : किसके घर नहीं होता ऐसा? उँगली ऊपर कीजिए ज़रा। यह बहनजी का कहना सही है, मज़ा किरकिरा हो जाता है। जीवन शांत और सयानेपनवाला होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : गुनाह बहुत बड़े हैं इसलिए केस अभी चलता रहता है।

दादाश्री : आपको तो कभी किसी दिन झमेला हो जाता होगा न? झमेला हो जाए न, मतभेद हो जाए न?

प्रश्नकर्ता : वह तो संसार का चक्र ही ऐसा है।

दादाश्री : नहीं, बहाने बनाने के लिए लोगों को यह अच्छा मिल गया है। संसार चक्र ऐसा है, ऐसा बहाना बनाते हैं मगर ऐसा नहीं कहते कि 'मेरी कमज़ोरी है।'

प्रश्नकर्ता : कमज़ोरी तो है ही। कमज़ोरी है इसलिए ही तकलीफ होती है न!

दादाश्री : हाँ, मतलब लोग संसारचक्र बताकर अपनी कमज़ोरी ढाँकने जाते हैं। इसलिए, ढँकने के कारण वह खड़ा रहा है। वह कमज़ोरी कहती है कि 'जब तक मुझे पहचानेंगे नहीं तब तक मैं जानेवाली नहीं हूँ।' संसार ज़रा-सा भी बाधक नहीं है। संसार निरपेक्ष है। सापेक्ष भी है और निरपेक्ष भी है। वह तो हम ऐसा करें तो ऐसा और ऐसा नहीं करें तो कुछ भी नहीं, कुछ लेना-देना नहीं। मतभेद वह तो कितनी बड़ी कमज़ोरी है!

प्रश्नकर्ता : लेकिन घर में मतभेद तो चलता रहे, वह तो संसार है!

दादाश्री : हमारे लोग तो बस, रोज़ तकरार होती है तब भी कहते हैं 'वह तो चलता रहे।' अरे! मगर उसमें डिवेलॅपमेन्ट (विकास) नहीं होता। तकरार क्यों होती है? क्यों ऐसा बोलते हैं? उसकी वजह ढूँढनी पड़े।

मतभेदों का लेखा-जोखा क्या?

घर में जब कभी मतभेद होता है तब कौनसी क्या दवाई लगाते हैं? दवाई की बोतल रखते हैं?

प्रश्नकर्ता : मतभेद की कोई दवाई नहीं है।

दादाश्री : क्या कहते हैं? तब फिर आप इस कमरे में मौन धारण करें और आपकी पत्नी उस कमरे में मौन धारण करें, ऐसे अबोल होकर सो जाना? बिना दवाई लगाए? फिर वह रोग कैसे मिट जाता होगा? घाव भर जाता होगा क्या? मुझे यह बताइए कि यदि दवाई लगाई नहीं है तो घाव भरा कैसे? मतलब सुबह में भी घाव भरता नहीं है। सबेरे चाय का कप रखते समय वह ऐसे पटककर रखे कि आप भी समझ जाएँ कि अभी रात का घाव भरा नहीं है। ऐसा होता है या नहीं होता है? यह बात ऐसे किसीके अनुभव के बाहर की थोड़े ही है? हम सभी समान ही हैं! मतलब, ऐसा क्यों किया कि अब भी वह मतभेद का घाव पड़ा है?

प्रश्नकर्ता : दूसरी क्या दवाई करें? शांत रहना है।

दादाश्री : कब तक शांत रहें, वह मतभेद मिटाए नहीं तब तक?

प्रश्नकर्ता : नहीं जी।

दादाश्री : वह तो फिर से खड़ा होनेवाला ही है। जहाँ मतभेद खड़े होते हों और जहाँ भयवाली जगह हो वहाँ रहा ही कैसे जाए?

प्रश्नकर्ता : तब क्या करना?

दादाश्री : तो कहाँ जाना? यानी, मतभेद रहित हो जाना, तब सिक्युरिटी (सलामती) हुई।

घर में किस बात को लेकर मतभेद होता है?

प्रश्नकर्ता : दो मनुष्य हर तरह से अलग हों, इसलिए कोई न कोई मतभेद तो होता ही है।

दादाश्री : नहीं, हमारा किसी के साथ मतभेद नहीं होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमारे तो ज़ोरदार मतभेद पड़ते हैं।

दादाश्री : ऐसा नहीं रखना चाहिए। हमें ठीक कर लेना चाहिए न? रीपेर कर डालना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, रीपेर भी हररोज़ थोड़ा-थोड़ा होता रहता है।

दादाश्री : लेकिन रोज़-रोज़ वह घाव बना ही रहता है। घाव भरता नहीं न, घाव बना तो रहे ही न! घाव के गड्ढे बने होते हैं! इसलिए गड्ढे ही नहीं होने देना। क्योंकि इस समय हमने गड्ढे किए हों इसलिए जब हमारा बुढ़ापा आए तब पत्नी फिर हमें ऐसे घाव दें। इस समय तो मन में कहे कि पति ज़ोरदार है, इसलिए थोड़े समय के लिए चलने देगी। फिर उसकी बारी आएगी तब हमें समझा देगी। उसके बजाय ऐसा व्यापार रखना कि वह हमें प्रेम करे, हम उसे प्रेम करें। भूलचूक तो सभी की होती ही है न! भूलचूक नहीं होती क्या? भूलचूक हो उसमें मतभेद करके क्या काम है? मतभेद करना हो तो बलवान के साथ जाकर लड़ना ताकि हमें तुरंत हाज़िर जवाब मिल जाए। यहाँ कभी किसी दिन हाज़िर जवाब ही नहीं मिलेगा। इसलिए दोनों ही समझ लेना। ऐसे मतभेद मत करना। जो कोई मतभेद करे उसे हम कहें कि 'दादाजी क्या कहते थे? ऐसे क्यों बात बिगाड़ते हैं?'

प्रश्नकर्ता : विचारों का मतभेद मेइन होता है। आचार-विचार में फर्क पड़ सकता है न?

दादाश्री : तो मतभेद से फिर उसका लेखा-जोखा करें तो फायदा निकलेगा क्या?

प्रश्नकर्ता : दोनों की समझ में फर्क हो तो मतभेद होता है।

दादाश्री : अच्छा! लेकिन धीरे-धीरे मतभेद निकाल देना है न? मतभेद नहीं हो क्या ऐसा प्रयत्न करते हैं?

प्रश्नकर्ता : समझाने की कोशिश करते हैं।

दादाश्री : समझने के लिए क्या रातभर सोचा करते हैं?

प्रश्नकर्ता : इतनी देर नहीं लगती है।

दादाश्री : तब कितनी देर लगती है? समझने की कोशिश की होती तो घर में फिर से मतभेद नहीं होता। फिर से मतभेद नहीं होता है न?

प्रश्नकर्ता : उस वस्तु में फिर मतभेद नहीं पड़ता।

दादाश्री : हाँ, लेकिन फिर उसको लेकर पड़ता ही है। एक बार नहीं, फिर तो पच्चीसों बार पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : मतभेद पड़ता है, मगर उसी वस्तु को लेकर नहीं।

दादाश्री : तब? फिर से उसी वस्तु को लेकर होता रहे। नौकर के हाथों से कप-रकाबी गिर पड़ें,

इस पर पत्नी कहेगी कि, 'उस बेचारे के हाथों से गिर पड़ें, उसमें आप क्यों अकुलाते हैं?' तब आप कहेंगे कि, 'नहीं, इतना बड़ा नुकसान हुआ उसका क्या?' फिर सोच-विचार के बाद आप मतभेद को निकाल दें। लेकिन जब फिर से कोई चीज़ गिर पड़े तब फिर से ऐसा ही होता है। यानी, इसमें कुछ भी सोचना आता ही नहीं है। विचार किया तो उसका नाम कहलाए कि फिर से मतभेद होता ही नहीं, सोलिड (ठोस) काम होता है। और यह तो कोई काम होता नहीं है। वहीं पर घूमते रहते हैं। जो गोल-गोल चक्कर काटते रहते हैं, वह कितने मील चलते होंगे? उसका कोई एन्ड (अंत) आता है क्या?

प्रश्नकर्ता : गोल-गोल घूमते रहें तो अंत नहीं आता।

दादाश्री : तब ऐसा ही है यह सब, गोल-गोल घूमते रहते हैं बेचारे। सारे मनुष्य सभी भटक, भटक, भटक, भटक, भटक किया करते हैं और फिर मनुष्यपन मिलेगा या नहीं उसका कोई ठिकाना नहीं है। जब मनुष्य में आते है तब ऐसा खाना-पीना और मौज़-मजा होते हैं, फिर बुरे विचार आने से वे जानवर में जाते हैं।

यानी समझना चाहिए कि यह सब क्या है और क्या नहीं है? यह जगत् कैसे बना? कैसे चलता है? हम कौन हैं? हम क्यों हैं? हमें क्या करना है? यह जानना है। यह सब जानना चाहिए हमें।

दीवार से टकराए उसमें दोष किसका?

प्रश्नकर्ता : हमें क्लेश नहीं करना हो मगर कोई सामने से आकर झगड़ा करे तो हम क्या करें? उनमें से एक जागृत हो मगर दूसरा क्लेश करे, तो वहाँ पर क्लेश तो होगा ही न?

दादाश्री : दीवार के साथ लड़ें तो कोई कितनी देर लड़ सकता है? इस दीवार के साथ एक दिन सिर टकराया तो हमें उसके साथ क्या करना चाहिए? सिर टकराया मतलब दीवार से हमारी तकरार हुई इसलिए क्या हम दीवार के साथ मारपीट करें? वैसे ही, हमें जो बहुत क्लेश करवाते हैं वे सभी दीवारें हैं! इसमें सामनेवाले को क्या देखना? हम अपने आप समझ जाएँ कि ये दीवार के समान है, ऐसा समझने के बाद कोई मुश्किल नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हम मौन रहें तो सामनेवालों को उलटा असर होता है कि इसका ही दोष है, ऐसा मानकर वे ज्यादा क्लेश करते हैं।

दादाश्री : यह तो हमने मान लिया है कि मेरे मौन होने से ऐसा हुआ। रात में कोई मनुष्य जाग गया और बाथरूम में जाते-जाते अँधेरे में दीवार के साथ टकरा गया, तब वहाँ क्या उसके मौन रहने से दीवार टकराई?

मौन रहिए या बोलें वह उसको स्पर्श ही नहीं करता है, कोई लेना-देना ही नहीं है। हमारे मौन रहने से सामनेवाले को असर होता है ऐसा कुछ नहीं है और हमारे बोलने से असर होता है ऐसा भी कुछ होता नहीं है। 'ऑन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स' हैं। किसी की ज़रा-सी भी सत्ता नहीं है। ज़रा-सी भी सत्ता बगैर का जगत् है, उसमें कोई क्या करनेवाला है? इस दीवार को यदि सत्ता होती है तो सामनेवाले को सत्ता हो सकती है। क्या दीवार की हमारे साथ लड़ने की सत्ता है? ऐसा ही सामनेवाले का है। और जिसके निमित्त से जो टकराव होनेवाला है वह तो छोड़नेवाला नहीं है। व्यर्थ शोर मचाने का क्या अर्थ है? जब उसके हाथ में सत्ता ही नहीं है! इसलिए आप दीवार के समान हो जाइए न! आप पत्नी को धमकाते रहते हैं तब उसके अंदर बैठे हुए भगवान नोट करते हैं कि 'यह मुझे धमकाता है'। और आपको वह धमकाए तब यदि आप दीवार समान हो जाएँ तो आपके भीतर बैठे भगवान आपकी 'हैल्प' करेंगे।

बिना क्लेश का घर मंदिर समान

जहाँ क्लेश होता है वहाँ भगवान नहीं रहते। इसलिए हम भगवान से कहें, 'साहब, आप मंदिर में रहिए, मेरे घर मत आना! हम ज्यादा मंदिर बनवाएँगे, मगर घर पर नहीं आना!' जहाँ क्लेश नहीं होता वहाँ भगवान का वास तय है, इसकी मैं आपको 'गारन्टी' देता हूँ। और क्लेश तो बुद्धि और समझदारी से मिटाया जा सकता है। मतभेद टले इतनी जागृति तो प्रकृतिगुण से भी आ सकती है। उतनी जागृति बुद्धि से भी आ सकती है। जानाँ (जान लिया) उसीका नाम कि किसी के साथ मतभेद नहीं हो। मति पहुँचती नहीं है इसलिए मतभेद होता है। मति फूल (पूर्ण रूप से) पहुँचे तो मतभेद नहीं होता। मतभेद टकराव है, 'विकनेस' (कमज़ोरी) है।

कुछ झँझट हो गई हो तब आप थोड़ी देर के लिए चित्त स्थिर करें और सोचें तो आपको सूझ पड़ेगी। क्लेश हुआ कि भगवान चले जाएँ या नहीं जाएँ?

प्रश्नकर्ता : चले जाएँ।

दादाश्री : कुछ मनुष्यों के यहाँ से भगवान हटते ही नहीं हैं, मगर क्लेश होने पर कहें, 'चलिए यहाँ से, यहाँ हमें रास नहीं आएगा। इस कलह में मुझे रास नहीं आएगा।' इसलिए फिर वे मंदिर में जाएँ। मंदिरों में भी फिर क्लेश करते हैं। मुकुट, अलंकार आदि चुरा ले जाते हैं, तब भगवान कहेंगे कि 'यहाँ से भी चलिए अब।' मतलब भगवान भी ऊब गए हैं।

जिसके भी घर में क्लेश होता है तब भगवान कहेंगे, 'इस घर में तो आ नहीं सकते, चलिए कहीं दूसरी जगह जाएँ।' इसलिए घर में फिर किसी बाबत को लेकर बरकत नहीं आती है। फिर कहेगा, 'इतना, इतना कमाता हूँ किन्तु बरकत नहीं आती है।' वह तो घर में क्लेश-कलह नहीं होने पर लक्ष्मीदेवी प्रसन्न होती है।

जहाँ निर्मल लक्ष्मी वहाँ निष्क्लेश व्यवहार

प्रश्नकर्ता : कई घरों में लक्ष्मी ही इस प्रकार की होगी क्या इसलिए क्लेश होता होगा?

दादाश्री : लक्ष्मी को लेकर ही ऐसा होता है। यदि लक्ष्मी निर्मल रही तो हमेशा सब अच्छा रहता है, मन अच्छा रहता है। यह तो बुरी लक्ष्मी प्रवेश कर गई है। उससे क्लेश होता है। मैंने बचपन में ही तय किया था कि बन पड़े वहाँ तक खोटी लक्ष्मी को प्रवेश ही नहीं करने देना है। इसलिए, आज छियासठ साल होने को आए लेकिन खोटी लक्ष्मी को प्रवेश करने नहीं दिया है। और इसलिए तो घर में कभी क्लेश पैदा भी नहीं हुआ है। घर में तय किया था कि इतने पैसों से घर चलाना। धंधा लाख रुपये की कमाई करे लेकिन यह 'ए. एम. पटेल' नौकरी करने जाए तो क्या पगार मिलेगी? बहुत हुआ तो छः सौ-सात सौ रुपये मिलेंगे। धंधा तो पुण्य का खेल है। इसलिए नौकरी में मिले उतने पैसे ही घर में खर्च किए जाएँ। शेष तो धंधे में ही रहने दिए जाएँ, इन्कमटैक्सवालों का खत आने पर हम कहें, 'वह जो रकम थी उसे भर दीजिए।' कब कौन-सा अटैक आ जाए उसका कोई ठिकाना नहीं है और यदि उन पैसों को खर्च कर डाला तो जब 'इन्कमटैक्सवालों का अटैक' आए तो हमारे भीतर भी 'अटैक' आ जाए। हर जगह 'अटैक' प्रवेश कर गए हैं न? इसे जीवन कैसे कहा जाए? आपको क्या लगता है? भूल लगती है या नहीं लगती? इसलिए हमें भूल मिटानी है।

लक्ष्मी सहज भाव से जमा होती हो तो होने देना। मगर उस पर आधार मत रखना। हम आधार लेकर चैन की साँस लें, लेकिन वह आधार कब खिसक जाए यह कहा नहीं जा सकता। इसलिए

सँभलकर चलिए कि जिससे अशाता वेदनीय में विचलित न हो जाएँ।

सन्मार्ग में खर्च करके साधिए सुमेल

प्रश्नकर्ता : लक्ष्मी टिकती नहीं है तो क्या करना?

दादाश्री : लक्ष्मी तो टिके ऐसी है ही नहीं। मगर उसका रास्ता बदल देना। अभी उस (संसारी) रास्ते पर है, तो उसका प्रवाह मोड़ देना और धर्म के रास्ते पर ले आना। मतलब जितनी सुमार्ग पर गई उतनी सही। भगवान आएँ उसके बाद लक्ष्मीजी टिके, उसके अलावा लक्ष्मीजी टिकेगी कैसे? भगवान हों वहाँ क्लेश नहीं होता और जहाँ केवल लक्ष्मीजी रही वहाँ क्लेश और झगड़े होते हैं। लोग ढेरों लक्ष्मी कमाते हैं, लेकिन वह बेकार जाती है। किसी पुण्यशाली के हाथों ही लक्ष्मी अच्छे रास्ते पर खर्च होती है। लक्ष्मी सही रास्तों पर खर्च हो वह बहुत भारी पुण्य कहलाए।

लक्ष्मी तो कैसी है? उसे कमाने में दु:ख, सँभालने में दु:ख, रक्षण करने में दु:ख और खर्च करने में भी दु:ख। घर में लाख रुपये आए मतलब उसे सँभालने की झँझट हो जाए। कौन-से बैंक में इसकी सेफसाइड है यह खोजना पड़े, और फिर सगे-संबंधीओं को मालूम होते ही वे तुरंत दौड़कर आ पहुँचे। सारे मित्र भी दौड़कर आएँ। कहें, 'अरे यार, मेरे पर इतना भी विश्वास नहीं है? केवल दस हजार की ज़रूरत है।' फिर विवश होकर उसे देने पड़ें। यह तो पैसा जमा होने पर भी दु:ख और तंगी होने पर भी दु:ख। नॉर्मल रहे वही बेहतर, वर्ना फिर खर्च करने में भी दु:ख होता है।

क्लेश-कलुषित लक्ष्मी

आज की लक्ष्मी 'पापानुबंधी पुण्य' की है इसलिए वह क्लेश करवाए ऐसी है। उसके बजाय कम आए तो अच्छा, घर में क्लेश तो नहीं घुसे! आजकल जहाँ-जहाँ लक्ष्मी का प्रवेश होता है वहाँ क्लेश का वातावरण हो जाता है। केवल रोटी और सब्ज़ी खाना बेहतर, लेकिन छप्पन भोग काम का नहीं है। क्योंकि ऐसी रसोई खाने के बाद क्लेश होता है तो वह किस काम का? इस काल की लक्ष्मी आती है और क्लेश लाती है। पापानुबंधी पुण्य की लक्ष्मी दु:ख देकर जाए, वर्ना एक ही रुपया ओहो! कितना सुख देकर जाए! पुण्यानुबंधी पुण्याईवाली लक्ष्मी तो घर में सभी को सुख-शांति देकर जाए, घर में सभी को धर्म के ही विचार रहा करें।

क्लेश के नाश्ते, यह तो कैसा संसार?

लोग बचपन से ही पैसे कमाते रहते हैं, लेकिन बैंक में देखने जाएँ तो कहेंगे, 'दो हजार ही जमा हैं', और सारा दिन हाय-हाय, हाय-हाय मची होती है। सारा दिन संताप, क्लेश और कलह। (आत्मा की) अनंत शक्ति है, आप अंदर सोचें ऐसा बाहर हो जाए इतनी प्रचंड शक्ति है, मगर आज तो विचार तो क्या, लेकिन मेहनत करके करने जाएँ तब भी बाहर नहीं हो पाता है। तब बोलिए मनुष्यों ने कहाँ तक की नादारी खींची है!

और यह तो ठहरा कलियुग, तो इस दु:खमुख्य काल में जीव कैसे होंगे? संतापवाले। सारा दिन संताप, संताप और संताप। अंतरशांति नहीं रहती। रुपयों से किसी प्रकार शांति होती नहीं है।

मुंबई में एक ऊँचे संस्कारी खानदान के एक बहन से मैंने पूछा, 'घर में क्लेश तो नहीं होता है न?' तब वह बहनजी कहे, 'रोज़ाना सबेरे क्लेश के ही नाश्ते होते हैं।' मैंने कहा, 'तब तो आपके नाश्ते के पैसों की बचत हुई!' बहनजी कहे, 'नहीं जी, फिर भी पैसे तो खर्च करने पड़ें, पाव और मक्खन लाना पड़े।' मतलब क्लेश भी चालू और नाश्ता भी चालू। अरे! किस प्रकार के मनुष्य हैं?

तय कीजिए कि क्लेश नहीं होना चाहिए

अपने घर में क्लेश रहित जीवन जीना चाहिए, इतनी तो हमारे में कुशलता होनी चाहिए। चाहे दूसरा कुछ नहीं आए लेकिन हमें सबको समझाना चाहिए कि, 'क्लेश होगा तो हमारे घर में से भगवान चले जाएँगे इसलिए हम तय करें कि हमें क्लेश नहीं करना है।' ऐसा तय करना कि क्लेश नहीं करना है। तय करने के बाद यदि क्लेश हो जाए तो समझना कि यह हमारी सत्ता के बाहर हुआ है। मतलब सामनेवाला क्लेश करता हो तो भी हम ओढकर सो जाएँ, फिर थोड़ी देर के बाद वह भी सो जाएगा। यदि हम भी जबान लड़ाएँ तो क्लेश बढ़े न?

सामनेवाला मनुष्य कोई भूल करके आया तो उसमें नुकसान नहीं है लेकिन क्लेश होने में बड़ा नुकसान है।

यदि फिर भी क्लेश हो तब?

आज एड्युकेटेड (शिक्षित) लोग ही घर में ज्यादा झगड़ा करते हैं। एड्युकेटेड कौन कहलाए? सुबह से शाम तक जिसके घर में ज़रा-सा भी क्लेश नहीं होता है, वे।

प्रश्नकर्ता : तब क्या उसमें ऐसा नहीं होगा कि दोनों में से एक व्यक्ति समझा ही करता है और दूसरा जो है वह डोमिनेट (रोब) करता रहता है, इसलिए वन वे (एकपक्षीय) जैसा नहीं हो जाता?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं होता। दोनों समझ जाएँ। ऐसे में हमें धीरे-से बातचीत करनी है कि 'देखिए, मैंने समझ लिया है, आपकी समझ में अभी पूर्ण रूप से आया नहीं लगता है, इसलिए पूरा समझ लीजिए। ताकि फिर हमारे बीच झँझट नहीं हो। और जैसा दादाजी कहते थे ऐसे क्लेश नहीं हो।' जिस घर में क्लेश नहीं वहाँ भगवान अवश्य होते ही हैं। भगवान वहाँ से हटते नहीं। फिर ऐसा करते भी कभी क्लेश हो जाए तो दोनों साथ बैठकर भगवान के नाम पर पछतावा करना कि, 'अब ऐसा नहीं करेंगे। हमसे भूल हो गई इसलिए आप यहाँ से जाना नहीं,' ऐसा कहना।

हम हो जाए 'झगड़ाप्रूफ'

प्रश्नकर्ता : हमें झगड़ा नहीं करना हो, हम कभी झगड़ा करते ही नहीं हों, फिर भी घर में सभी रोज़ सामने से झगड़े किया करें तो वहाँ क्या करना?

दादाश्री : हम 'झगड़ाप्रूफ' (झगड़े नहीं हो ऐसे) हो जाएँ। 'झगड़ाप्रूफ' होंगे तभी इस संसार में रह सकेंगे। मैं आपको 'झगड़ाप्रूफ' बना दूँगा। झगड़ा करनेवाला भी तंग आ जाए ऐसा हमारा स्वरूप होना चाहिए। सारे संसार में कोई भी हमें 'डिप्रेस' नहीं कर सके ऐसा होना चाहिए। हम 'झगड़ाप्रूफ' हो गए फिर झँझट ही नहीं न! लोग झगड़ा करना चाहें, गालियाँ देना चाहें तब भी हर्ज नहीं और फिर भी हम बेशर्म नहीं कहलाए जाएँगे, उलटे जागृति बहुत बढ़ेगी।

पहले जो झगड़े किए थे उनके बैर बँधे हैं और वे आज झगड़ों के रूप में चुकता हो रहे हैं। झगड़ा होता है उसी क्षण बैर का बीज पड़ जाता है जो अगले जन्म में उगता है।

प्रश्नकर्ता : तो वह बीज कैसे दूर हो सके?

दादाश्री : धीरे-धीरे 'समभाव से निकाल' करते रहें तो दूर हो जाए। बहुत भारी बीज पड़ा हो तो देर लगती है, शांति रखनी पड़े। प्रतिक्रमण बहुत करने पड़ें। हमारा कोई कुछ लेता नहीं है। दो वक्त का खाना मिले, कपड़े मिले, फिर क्या चाहिए? चाहे कमरे को ताला लगाकर जाए, लेकिन हमें दो वक्त का खाना मिलता है या नहीं मिलता इतना देखना है। हमें बंद करके जाए तब भी कोई हर्ज

नहीं है, हम सो जाएँ। पूर्वभव के बैर ऐसे बँधे होते हैं कि वह हमें कमरे में बंद करके जाए! बैर, और वह भी नासमझी में बँधा है। यदि हलका हो, तब भी हल निकल आए। लेकिन भारी बैर हो, वहाँ हल कैसे आएगा? इसलिए वहाँ बात को छोड़ देना।

अब सारे बैर छोड़ देने के लिए कभी हमारे पास से 'स्वरूपज्ञान' प्राप्त कर लेना ताकि सारे बैर छूट जाएँ। इसी जन्म में ही सारे बैर छोड़ देना, हम आपको रास्ता दिखलाएँगे।

वहाँ विचार से काम लेना

जगत् में क्लेश से कोई मुक्त नहीं हो सकता। केवल ज्ञानी पुरुष ही मुक्त करवाए।

आप इतने बड़े हुए तब भी कोई उपाय नहीं खोज निकाला?

प्रश्नकर्ता : नहीं दादाजी, मैं सच्ची बात करता हूँ।

दादाश्री : मेरे पास तो सभी सच्ची बात करते हैं। मगर क्लेश मिटाना पड़े न? उसका निकाल करना ही पड़े न?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, मिटाना पड़े।

दादाश्री : अब आप ज़रा सोचकर करना! या फिर दादा भगवान का नाम लेना। मैं ही सारे काम दादा भगवान का नाम लेकर करता हूँ। दादा भगवान का नाम लेंगे तो तुरंत ही आपकी धारणा अनुसार (क्लेश निकालने का काम) हो जाएगा।

घड़े पर ढक्कन ढाँक दें तो?

मनुष्य को सुध ही नहीं है, खाते हैं, पीते हैं उसकी भी सुध नहीं है। हमें यह सुध बढ़ाने की ज़रूरत है। यह तो सुध सारी अहंकार में ही प्रवेश कर गई है। 'मैं ऐसा हूँ और वैसा हूँ', ऐसा नहीं होना चाहिए, मुझे सब जानने का अभी बहुत बाकी है ऐसा समझ में आना चाहिए। ज्ञान के लिए खुला छोड़ना चाहिए। घड़े के ऊपर ढक्कन ढाँक दें फिर कौन पानी डालेगा? क्या आपको बात पसंद आई? कौन-सी बात पसंद आई आपको, बताइए?

प्रश्नकर्ता : घड़े पर ढक्कन नहीं ढाँकना चाहिए, यह बात पसंद आई।

दादाश्री : बहनों को भी क्लेश नहीं करना चाहिए और पुरुषों को भी नहीं करना चाहिए, एक दिन दोनों एक होकर दादाजी कहते हैं ऐसे नये सिरे से कॉन्ट्रैक्ट कर लीजिए, ताकि कहीं झँझट नहीं रहे। पति अकुलाए तो आप (पत्नी को) शांत हो जाना और बैठे रहना। बाद में फिर जब अकुलाहट ठंडी होने को आए उस वक्त चाय लेकर आ जाना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, कॉन्ट्रैक्ट करने के बाद बैठे रहना चाहिए मगर बैठा नहीं जाए, उसका क्या? शांत नहीं रहा जाए और झगड़ पड़ें तो क्या करना?

दादाश्री : झगड़ पड़ें तब भी 'हम' 'उनसे' कहें कि ये दो पुतले लड़ते हैं। आपको यह ज्ञान है इसलिए दो पुतले झगड़ते हैं यह देखा करें 'हम', उसकी फिल्म देख लेना।

ऐसा सोचा है कभी?

मैं तो इतना समझूँ, कि ऐसे झगड़ने के बाद 'पत्नी' के साथ व्यवहार ही नहीं रखना हो तो अलग बात है। लेकिन फिर से बोलना है, तो बीचवाली सारी की सारी भाषा गलत है। यह मेरे लक्ष्य में ही होता है कि दो घंटे के बाद फिर से बोलना है, इसलिए उसकी किच-किच नहीं करते। यदि आप अभिप्राय फिर से बदलनेवाले नहीं हैं, तो अलग बात है। हमारा अभिप्राय बदले नहीं तो हमारा किया सही है। फिर से यदि पत्नी के साथ बैठनेवाले

ही नहीं हों तो लड़े वह काम का है। लेकिन यदि कल साथ बैठकर फिर से भोजन करनेवाले हैं तो फिर आज जो नाटक किया उसका क्या? यह विचार करना चाहिए न? लोग तिल भुन-भुनकर बोते हैं, इसलिए सारी मेहनत व्यर्थ जाती है। झगड़े होते हों तब लक्ष्य में होना चाहिए, कि यह कर्म नाच नचाते हैं। फिर उस नाच का ज्ञानपूर्वक हल निकालना चाहिए।

सब-सबकी सम्हालो

प्रश्नकर्ता : झगड़ा करनेवाले दोनों पक्षकारों को यह समझना चाहिए न?

दादाश्री : नहीं, यह तो 'सब सबकी सम्हालो।' हम सुधरें तो सामनेवाला सुधरे। यह तो विचारणा है, कि घड़ीभर के बाद साथ बैठना है तो फिर संताप क्यों? शादी की है तो संताप किस लिए? आप बिते कल को भूल चूके होते हैं, और मुझे तो सारी की सारी वस्तु 'ज्ञान' में हाज़िर ही होती है। यद्यपि यह तो सद्विचारणा है, इसलिए जिसे 'ज्ञान' नहीं हो उसको भी काम आती है। यह तो अज्ञान से मानते हैं कि वह सिर पर सवार हो जाएगी। कोई मुझसे पूछे तो मैं कहूँ कि, 'तू भी लट्टू और वह भी लट्टू, इसलिए कैसे सवार हो जाएगी? सवार होना वह क्या उसके ताबे में है?' अर्थात्, वह 'व्यवस्थित' के (संयोगों के) ताबे में है। और पत्नी सवार होकर क्या सिर पर बैठनेवाली है? आप ज़रा ढील दें यानी उस बेचारी के मन की अभिलाषा पूरी हो जाए कि, 'अब पति मेरे काबू में है!' उसे ऐसा संतोष हो।

सहूलियत बढ़ी, मगर समझदारी?

पहले के समय के लोग तो खाने-पीने को नहीं हो, कपड़े-लत्ते नहीं हो तो भी चला लेते थे और आज तो किसी बात की कोई कमी नहीं है फिर भी इतना संताप, संताप और संताप। उसमें भी पति को 'इन्कमटैक्स-सेल्सटैक्स' की झँझट होती है, इसलिए वहाँ के साहब से वे डरते रहते हैं। और घर में यदि पत्नी से पूछें कि, 'आप किससे डरती हैं?' तब वह कहे कि, 'मेरे पति कठोर हैं।' ऐसे संसार में आपको अच्छा लगता है यह सब? संसार कड़वा नहीं लगता?

प्रश्नकर्ता : गहराई में जाएँ तो कड़वा लगे।

दादाश्री : मतलब घर में क्लेश नहीं होना चाहिए, बस। कुछ भी हो जाए, उलटा-सीधा हो जाए, मगर क्लेश नहीं होना चाहिए। घर में झगड़े नहीं होने चाहिए यही धर्म होना चाहिए, बस।

वाणी की लड़ाइयाँ विकट

प्रश्नकर्ता : कई घर ऐसे होते हैं कि वहाँ वाणी से कहा-सुनी हुआ करती है लेकिन मन और हृदय साफ होते हैं।

दादाश्री : क्लेश वाणी से होता हो, मगर सामनेवाले के हृदय पर असर होता है। बाकी, यदि बिना असर किए रहता हो तो कोई हर्ज नहीं है। मगर ऐसा है कि, बोलनेवाला हृदय से और मन से चोखा हो वह बोल सके। मगर सुननेवाले को तो जैसे पत्थर लगा हो ऐसा लगे, इसलिए क्लेश होता ही है। जहाँ बोल ज़रा-सा भी खराब है और विचित्र बोल बोले जाते हैं, वहाँ क्लेश होता है।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले को कईबार असर नहीं होता है।

दादाश्री : असर होता है! वह तो केवल दिखावा करे, उतना ही। अंदर सब असर करता है। मन तो बहुत सूक्ष्म है। शब्द शायद खराब निकल जाए लेकिन सामनेवाले को असर किए बगैर नहीं रहता। शब्द हमेशा दिल पर घाव करता है। कुछ तो ऐसे बोल बोलते हैं कि हार्टफेइल भी हो जाता है। मतलब, यह तो तरह-तरह के लोग। बोल, शब्द

बहुत विकट है। शब्द यदि नहीं होते तो काम ही हो जाता। ये शब्द नहीं होते तो मोक्ष तो सहजासहज है। इस काल में वाणी से ही कर्म बंध है इसलिए किसी के बारे में एक शब्द भी बोल नहीं सकते।

बोल तो एक्सपेन्स (खर्च) कहलाए। वाणी खर्च नहीं हो जानी चाहिए। बोल तो लक्ष्मी है। उसे तो गिन-गिनकर देना चाहिए। लक्ष्मी कोई बिना गिने देता है? यह बोल ऐसी वस्तु है कि वह यदि सँभाला गया तो सारे ही महाव्रत उसमें समा जाते हैं।

वाणी के पर्यायों का असर

एक मनुष्य को यदि आप कहें कि 'आप गलत हैं।' अब गलत कहने के साथ ही इतना सारा विज्ञान छा जाता है कि भीतर उसके अनेकों पर्याय खड़े हो जाते हैं और आपको दो घंटे तक तो उसके प्रति प्रेम ही उत्पन्न नहीं होता। इतने सारे पर्याय! इसलिए शब्द नहीं बोला जाए तो उत्तम और बोला जाए तो प्रतिक्रमण कीजिए। बोला नहीं जाए ऐसा तो हम कह नहीं सकते, क्योंकि व्यवस्थित है न! मगर बोला जाए तो प्रतिक्रमण कीजिए, वही साधन है हमारे पास।

प्रश्नकर्ता : पति-पत्नी में जो झगड़े होते हैं, वे झगड़े ऊपरवाला करवाता है या बुद्धि से होते हैं?

दादाश्री : ऊपरवाला तो ऐसा करवाए ही नहीं न। यह तो आपकी नासमझी से होते हैं। समझदार ऐसा नहीं करता और बिना समझवाला करता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन सबकी बुद्धि समान थोड़े ही होती है, दादाजी? विचार भी समान नहीं होते। हम अच्छा करें तब भी कोई समझ नहीं पाए, उसका क्या करना?

दादाश्री : ऐसा कुछ भी नहीं है। विचार सब समझ में आते हैं। लेकिन सभी अपने आप में ऐसा समझते हैं कि 'मेरे विचार सही है'। और ऐसे, सभी के विचार गलत हैं। विचार करना आता ही नहीं है। भान ही नहीं है जहाँ। मनुष्य के तौर पर भी भान नहीं है। यह तो मन में मानकर बैठे हैं कि, 'मैं बी.ए. ग्रेजुएट हुआ।' लेकिन मनुष्य के तौर पर भान होता तो क्लेश ही नहीं होता। खुद हर जगह एडजस्टेबल होता।

प्रश्नकर्ता : वाणी से किसी प्रकार से क्लेश नहीं हो, लेकिन मन में क्लेश उत्पन्न हुआ हो, वाणी से कहा गया नहीं हो लेकिन मन में भरा पड़ा होता है। तो क्या वह घर बिना क्लेश का कहलाए?

दादाश्री : वह अधिक क्लेश कहलाए। मन बेचैनी का अनुभव करे उस समय क्लेश होता ही है और फिर हमसे कहे, 'मुझे कहीं चैन नहीं है।' वही क्लेश की निशानी। क्लेश हलके प्रकार का हो या भारी प्रकार का हो। भारी प्रकार के क्लेश तो ऐसे होते हैं कि हार्टफेइल भी हो जाए। कुछ तो ऐसे बोल बोलते हैं न कि तुरंत हार्टफेइल हो जाए।

बोलकर मत बिगाड़ें संसार

ये दरवाज़े खड़कते हैं तब भी हमें अच्छा नहीं लगता, दरवाज़े हवा से खड़कने लगें तो आपको अच्छा लगे?

प्रश्नकर्ता : नहीं जी।

दादाश्री : तब फिर मनुष्य लड़े-झगड़े वह कैसे पसंद आएगा? कुत्ते लड़ते हों तो भी हमें अच्छा नहीं लगता।

यह तो कर्म के उदय से झगड़े चलते रहते हैं। लेकिन जबान से उलटा बोलना बंद कीजिए। बात को अपने तक ही रहने दीजिए। घर में या बाहर सुनाना बंद कीजिए। कई स्त्रियाँ कहती हैं, 'चाहे तो दो धौल जमा दीजिए लेकिन आप यह जो बोलते हैं न, इससे तो मेरी छाती में घाव होते हैं।' अब लीजिए,

छूआ तक नहीं है फिर भी कैसे घाव लगते हैं?

खुद ही वक्र है मुआ। रास्ते पर से गुज़र रहा हो और छत पर से पत्थर का टुकडा आकर लगे और खून निकल आए तो वहाँ पर कुछ क्यों नहीं बोलता? यह तो जान-बूझकर पत्नी पर रौब जमाना है, ऐसा करके स्वामीत्व जताना है। फिर बुढ़ापे में पत्नी उसकी पूजा करेगी क्या? कुछ माँगने पर कहेगी, 'क्या किच-किच लगा रखी है? चूपचाप पड़े रहिए।' इसलिए फिर जान-बूझकर पड़े रहना पड़े, क्योंकि आबरू किरकिरी ही हो जाए न। ऐसा करने के बजाय मर्यादा में रहिए। घर में लड़ाई-झगड़े क्यों करते हैं, दूसरों से भी कहना कि घर में लड़ाई-झगड़े नहीं करें।

इच्छा नहीं है फिर भी हो जाए

प्रश्नकर्ता : हमारी इच्छा नहीं हो फिर भी क्लेश हो जाए, वाणी खराब निकले तो क्या करना?

दादाश्री : जो कार्य पूरा होने को आता है वह इच्छा नहीं होने पर भी कार्य होता रहता है। तब पूरा होने के बाद पश्चाताप-प्रतिक्रमण करना।

प्रश्नकर्ता : हम मन से ऐसी इच्छा करें कि इस व्यक्ति के साथ बोलना नहीं है, कोई क्लेश नहीं करना है, झगड़ना नहीं है और इसके बावजूद ऐसा होता है कि झगड़ पड़ते हैं, बोल ही दिया जाता है, क्लेश हो ही जाता है। सबकुछ हो ही जाता है। तब ऐसा क्या करूँ जिससे यह सब रुक जाए?

दादाश्री : वह आख़िरी स्टेप्स (पायदानों) पर है, जब रास्ता पूरा होने को आता है तब हमारे भाव में नहीं हो फिर भी झूठ बोला जाए। तब हम वहाँ पश्चाताप करें तो मिट जाए, बस, हो गया। कुछ गलत हो गया तो इतना ही उपाय है, अन्य कोई उपाय नहीं है। जब कार्य पूरा होने को आया हो तब अंदर खराब करने का भाव नहीं हो और कार्य बिगड़ जाए। वर्ना, वह कार्य अभी अधूरा हो, हमें उलटा करने का भाव भी होता है, कार्य उलटा होता भी है, दोनों होते हैं। यह सब करने का भाव नहीं होता और उलटा हो जाए, तब हम समझें कि अब इसका निश्चित रूप से अंत आने को है, उस पर से अंत का पता चलता है। मतलब 'कमिंग इवेन्ट्स कास्ट्स धेर शेडॉझ बीफोर' (जो होनेवाला है उसके प्रतिघोष पहले सुनाई पड़ते है)।

मोक्ष के द्वारे चाहिए मीठी वाणी

भगवान क्या कहते हैं? अभी आपने मोक्षमार्ग के दरवाज़े पर रहकर दरवाज़े की धजा देखी है। दरवाज़े में प्रवेश करेंगे, तब वाणी मीठी हो जाएगी। वाणी मीठी हुई बगैर दरवाज़े में प्रवेश नहीं मिलता है। प्रवेश की कोई निशानी तो होनी चाहिए न कुछ या नहीं होनी चाहिए?

जितनी कड़वी वाणी हो, उसमें से कड़वाहट कम हो जाए। फिर खारी वाणी निकले। द्वेषी वाणी होती है न? ऐसी खारी वाणी कम हो जाए। तीखी वाणी निकलती है न? वह तीखी वाणी कम होती जाए।

इस वाणी में अंदर क्या कहीं मिर्च डालने में आती है? देखिए तो, बिना नमक-मिर्च के, लोग कैसा-कैसा कहते हैं? ऐसी तीखी मत बोला कीजिए। अरे! मिर्च नहीं डाली है और क्यों ऐसा बोला करते हैं? फिर भी लोग तीखी वाणी बोलते हैं न! कड़वी वाणी मीठी हो जाए तो कैसी बात बन जाए!

मतलब, वह शब्द धीरे-धीरे मीठा होना चाहिए, मधुरता आनी चाहिए। ऐसी मधुरता धीरे-धीरे आए फिर वह शब्द दूसरों को प्यारा लगे, डाँटे तब भी प्यारा लगे।

कषाय नहीं हो तो डाँटने में कोई बाधा नहीं है, कषाय बाधाजनक है।

प्रश्नकर्ता : मगर वाणी मधुर होनी चाहिए।

दादाश्री : मधुर होनी चाहिए। बैरी नहीं हो। यदि मधुर की गई हो तो फिर वह सिर्फ मुँह से ही रहती है, भीतर से नहीं होती। ऐसी मधुर की गई काम की नहीं। क्लेशभाव कम होता जाए, प्रेम बढ़ता जाए वैसे-वैसे वाणी मीठी होती जाए।

वाणी मीठी कब होती है? जब भेदभाव कम होता जाए तब, प्रेम बढ़े तब, अपने घर के मनुष्यों पर तो प्रेम हर किसी को होता है। लेकिन जब अपने घर के मनुष्यों जैसा प्रेम दूसरों के लिए भी उभरता जाए तब वाणी मधुर होती जाए। और तब दो धौल जमाने पर भी उसे प्रेम ही लगता है।

प्रेम से ही सुधरती है दुनिया

एक भी मनुष्य को सुधार सकें ऐसा यह काल नहीं है। खुद ही बिगड़ा हुआ है, वह सामनेवाले को क्या सुधारेगा? खुद ही 'वीकनेस' (कमज़ोरियों) का पुतला हो, वह सामनेवाले को क्या सुधारेगा? उसके लिए तो बलवानपन चाहिए। मतलब, प्रेम की ही ज़रूरत है।

दुनिया हमेशा प्रेम से ही सुधरती है। उसके लिए प्रेम के सिवा दूसरा कोई उपाय ही नहीं है। यदि धाक से सुधरती तो यह गवर्नमेन्ट (सरकार) डेमोक्रेसी (लोकतंत्र) को समाप्त कर दे और जो कोई गुनाह करे उसे जेल के हवाले करके फाँसी पर लटका दे। प्रेम से ही सुधरता है जगत्।

प्रश्नकर्ता : कईबार हमारे प्रेम करने के बावजूद सामनेवाला मनुष्य समझ नहीं सकता है।

दादाश्री : फिर हमें वहाँ क्या करना चाहिए? क्या सींग मारने चाहिए?

प्रश्नकर्ता : पता नहीं फिर वहाँ क्या करना?

दादाश्री : वह सींग मारे फिर हम भी सींग मारें इसलिए वह फिर से सींग मारे फिर लड़ाई चालू। जीवन क्लेशित हो जाए फिर।

प्रश्नकर्ता : हम प्रेम रखें और सामनेवाला मनुष्य हमारा प्रेम समझे नहीं तो हम क्या करें फिर?

दादाश्री : क्या करना? शांत रहना है हमें। हम उसे और क्या करेंगे? क्या उसे मारें?

प्रश्नकर्ता : लेकिन हम उस कक्षा तक नहीं पहुँचे हैं कि शांत रह सकें।

दादाश्री : तब उछल-कूद मचाना उस घड़ी। और क्या करना? जब पुलिसवाला धमकाता है तब क्यों शांत रहते हैं?

प्रश्नकर्ता : पुलिसवाले की ऑथोरिटी है, उसकी सत्ता है।

दादाश्री : तो हम उस सामनेवाली व्यक्ति को ऑथोराइज्ड कर दें। पुलिस के आगे सीधे रहें और यहाँ सीधे नहीं रह सकें!

बच्चों के साथ करें 'डीलिंग', समझदारी से

जैसे उम्र बढ़ती जाए वैसे खुद ऐसा समझे कि मेरी भूल हो ही नहीं सकती, बच्चों की बहुत भूलें होती हैं। खुद की भूलें बहुत होती हों मगर खुद ऐसा माने कि 'मेरी भूल नहीं होती', मानों जैसे न्यायाधीश हो। बेटा फिर कहे भी कि 'आपमें अक्ल नहीं है।' तब भी वह मन में विचार करे कि बेटा अभी छोटा है, नासमझ है। अरे! वह कहता है तो ज़रा तौलकर तो देखिए। खुद में अक्ल है या नहीं यह तौलकर देखना। जब बेटा ऐसा कहता है तो क्या तौलना नहीं चाहिए कि 'मुझमें अक्ल नहीं है तो ज़रा तौलकर देख लूँ!' तब अंदर सोचे तो पता चले कि सच में अक्ल नहीं है। अक्ल होती तो ऐसा नहीं होता। अक्ल हो वहाँ क्लेश नहीं होता। जो अक्लमंद होते हैं न, उनके वहाँ सब शांति से खाते-

पीते हैं। कम हो तो कम, और ज्यादा रहा तो ज्यादा, मगर क्लेश नहीं होता। यहाँ बिना क्लेश के कितने घर होंगे?

प्रेम बचाकर करना व्यवहार

हम अमरीका में जहाँ-जहाँ गए वहाँ सब जगह बच्चों को लेकर शोर उठता था कि, 'दादाजी, हमारे बच्चों का क्या होगा?' तब मैंने पूछा, 'क्या आपत्ति है?' तब कहे, ''कल यदि 'मेरी' (विदेशी लड़की) के साथ शादी करके आए तो मैं क्या करूँगी? 'मेरी' के साथ शादी करे तो मेरी क्या दशा होगी?'' इस पर मैंने कहा, ''तब 'मेरी' की सास हो जाना, उसमें क्या गलत है? 'मेरी' की सास होना रास नहीं आए क्या?'' उसके आने के बाद फिर ऊब जाए तो नहीं चलता। इसलिए उससे पहले सँभल जाना। साथ रखेंगे तो क्लेश पैदा होगा और इससे उनका जीवन भी बरबाद होगा और हमारा जीवन भी बरबाद होगा। यदि प्रेम चाहिए तो उन दोनों को अलग रखिए और प्रेम बचाइए, वर्ना जीवन बरबाद होगा, प्रेम कम हो जाएगा। बेटे की शादी हो गई हो और हम उन दोनों को अपने साथ रखे तो बेटा पत्नी का कहा मानेगा, आपका कहा नहीं मानेगा। और पत्नी कहेगी कि, 'आज तो आपकी मम्मी ऐसा कहती थी और वैसा कहती थी।' तब वह कहेगा, 'हाँ, मम्मी ऐसी ही है।' फिर चला तूफ़ान। अब इसके बजाय, उन्हें दूर रखना और रोज़ाना उनके घर जाकर उन्हें मिल आना बेहतर। दूर से सब अच्छा रहे।

प्रेम में क्या हमें अँधे हो जाने की ज़रूरत है? प्रेम में अँधा नहीं होना चाहिए न! क्या आप बहू को भी घर में रखना चाहते हैं और बेटे को भी घर में रखना है? और वह भी उसके बाप बनने तक?

छः महीने में ही कलह पैदा हो जाएगा, ऐसी भूल मत करना। बेटा बड़ा होने पर, हमें इन फ़ॉरिनवालों की तरह रखना है। बेटा अट्ठारह साल का हो जाए तो उसे कह देना कि 'तू अलग रहे'। हमारा 'डीलिंग' फ़ॉरिनवालों की तुलना में बहुत ऊँचा है। अलग रहने पर भी एकता हो ऐसा डीलिंग हम रखते हैं, और वे बराबर नहीं रखते। जमाने के अनुसार नहीं चलें तो मूर्ख ठहरेंगे क्योंकि अब यह जमाना अलग तरह का है।

संस्कार सिंचन से कल्याण

प्रश्नकर्ता : बच्चों में क्लेश नहीं हो इसके लिए संस्कार सिंचन कैसे करना?

दादाश्री : छोटे बेटे-बेटियों को समझाना कि सबेरे नहा-धोकर भगवान की पूजा करें और प्रतिदिन संक्षिप्त में बोलें कि, 'मुझे और जगत् को सद्बुद्धि दीजिए, जगत् कल्याण कीजिए।' इतना बोलें तो उसे संस्कार मिले कहलाए और माता-पिता का कर्मबंधन छूटा। दूसरा, बच्चों को आपके द्वारा 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' (और प्रार्थना-आरती आदि सब) रोज़ बुलवाना चाहिए।

आरती से अटके क्लेश

प्रश्नकर्ता : घर में आरती करें उसका क्या महत्व है?

दादाश्री : आरती करें उसका दूसरा कुछ महत्व नहीं है, आरती का फल आपको मिलता है। आरती का फल यहाँ मेरी उपस्थिति में जैसा मिले वैसा किसी अन्य जगह पर नहीं मिलता। मगर फिर भी आरती का बहुत ऊँचा फल मिलेगा, घर पर करने पर भी, इसलिए सभीने ऐसा प्रबंध कर दिया है। सारा दिन दुषित वातावरण खड़ा नहीं होता न! निरे क्लेश के वातावरणवाले घर हैं। अब उनमें आरती का प्रबंध किया गया हो न, तो सारा दिन बच्चों आदि में कुछ फर्क पड़ जाता है। और आरती में तो बच्चे आदि सभी खड़े रहते हैं। उन बच्चों का

मन अच्छा रहता है फिर। और अकुलाए हुए बच्चें हों, तब उन बच्चों को तो क्या है? यह ताप, अकुलाहट और बाहरी कुसंग को लेकर कुचारित्र के विचार ही आते रहते हैं। ऐसे में यह आरती जो है वह ठंडक देती है और उन विचारों को उड़ा देती है। बचाव का साधन है यह। यह बहुत सुंदर है। कई तो सुबह-शाम करते हैं। बच्चे साथ में खड़े रहें न, और बड़ों को क्लेश नहीं होता।

निरा क्लेश का ही वातावरण है। आज तो, क्लेश नहीं करना हो, पैसे हों, सारे साधन हों, तब उसके यहाँ भी क्लेश प्रवेश कर ही जाता है। खाने पर बैठने के बाद टेबल थपथपाए, थपथपाते हैं या नहीं थपथपाते? 'आपने ऐसा किया और आपने वैसा किया', हो जाए शुरू, ऐसा नहीं होता क्या? इसलिए कई परिवारों में ऐसा तय हुआ है कि भोजन के बाद सभी को, पत्नी-बच्चे और पति सबको साथ मिलकर हमारा यह 'विधि-आरती-असीम जय जयकार हो' आदि बोलना है, ताकि बच्चें आदि सब रेग्युलर हो जाएँ! सयाने हो जाएँ! दूसरे दिन जो बाहर घूमने जाने को कहता हो वह अब कहे, 'हम वह बोलेंगे जो कल बोला था'। ऐसा कहे। बाहर घूमना मुलतवी कर दें और अच्छे संस्कार पड़ें।

जिनके यहाँ 'दादा' की आरती उतारी जाती है उनके यहाँ तो बहुत ऊँचा वातावरण बरतता है। आरती तो विरति है! जिनके घर आरती होती है उनके घर का तो वातावरण ही सारा फेरफारवाला हो जाता है। खुद तो 'शुद्ध' होता जाए और घर के सभी को बच्चे आदि सभी को ऊँचे संस्कार मिलें। यह आरती बराबर बोली जाए तो घर पर 'दादा' हाज़िर होते हैं! और दादाजी हाज़िर हुए यानी सारे देवलोक हाज़िर होते हैं और सारे देवों की कृपा रहती है। आरती यदि घर में नियमित बोली जाए और इसके लिए अमुक समय तय रखा जाए तो बहुत उत्तम होगा। घर में यदि एक ही क्लेश हो जाए तो सारा वातावरण बिगड़ जाए। लेकिन यह आरती उसकी प्रतिपक्षी कहलाए। उससे क्या होता है? कि वातावरण सुधर जाता है और पवित्र, शुद्ध हो जाता है!

आरती के समय हम पर जो फूल चढ़ाएँ जाते हैं उन फूलों को हम देवों को चढ़ाते हैं और फिर आपको चढ़ाते हैं। देवों को चढ़ाए गए फूल जगत् में किसी को चढ़ते ही नहीं हैं, यह तो आपको ही चढ़ते हैं। उससे मोक्ष तो रहता है और फिर आपको सांसारिक विघ्न नहीं आते।

आत्मस्वभाव तो संग में रहता होने के बावजूद असंगी है, उसको कोई दाग़ लगता ही नहीं, मगर वह तो 'ज्ञानी पुरुष' मिले और असंग आत्मज्ञान यानी कि दरअसल आत्मा प्राप्त करा दें, तब। वर्ना इस संसार में तो, तू जो जो क्रिया करेगा उसकी मैल चढ़े बगैर नहीं रहेगी और मोक्ष नहीं मिलेगा। इसलिए जा, पहुँच जा 'ज्ञानी पुरुष' के पास।

क्लेश रहित दशा, वही सच्चा आनंद

प्रश्नकर्ता : ऐसी कौन-सी चीज़ है दुनिया में कि जो आनंद प्राप्त करवाए?

दादाश्री : 'ज्ञानी पुरुष' को देखते ही आनंद आता है।

निरंतर आनंद में रहना उसीका नाम ही मोक्ष। कोई गालियाँ दे, जेब काटे, फिर भी आनंद नहीं जाए उसका नाम मोक्ष। मोक्ष कोई अन्य वस्तु नहीं है। 'ज्ञानी पुरुष' को निरंतर परमानंद ही रहता है।

जब तक व्यवहार आत्मा है तब तक मानसिक आनंद है। आत्मा जानने के बाद आत्मा का आनंद प्राप्त होता है। शब्द के रूप में सुने गए आत्मा से काम नहीं होता है, यथार्थ स्वरूप में होना चाहिए।

जीव मात्र के भीतर अतिशय आनंद भरा पड़ा ही है, मगर आत्मा का वह आनंद आना बंद हो गया है। कषाय, क्लेश, राग-द्वेष होते हैं उनसे आत्मा पर आवरण आता है और आनंद चला जाता है। गाय के सींग पर राई का दाना रखें और जितनी देर टिका रहे उतनी ही देर यदि आत्मा का आनंद चख लिया तो वह फिर जाता नहीं है, एक बार दृष्टि में बैठ गया इसलिए। सच्चा आनंद निरंतर रहे, बहुत तृप्ति रहे। उस आनंद का वर्णन नहीं किया जा सकता।

समझदारी सजाए संसार व्यवहार

प्रश्नकर्ता : क्लेश के कारण मनुष्य की वृत्ति थोड़ी वैराग्य की ओर मुड़ती है, ऐसा कह सकें?

दादाश्री : क्लेश के कारण जो वैराग्य उत्पन्न होता है न, ऐसा वैराग्य तो मनुष्य को संसार में ज्यादा गहराई में ले जाए, उसके बजाय ऐसा वैराग्य नहीं हो तो बेहतर। वैराग्य तो समझदारीपूर्वक का होना चाहिए। समझदारीपूर्वक का वैराग्य काम का है। किसी जानवर को अपने आप पर का विश्वास खलास नहीं होता है। इस मनुष्य जाति के अलावा जो सभी जातियाँ हैं, उनको अपने आप पर का विश्वास खलास नहीं होता। केवल ये मनुष्य ही बिलकुल कँगाल जीव हैं, बुद्धि का इस्तेमाल करते हैं इसलिए कँगाल हो गए हैं। इनको भगवान ने निराश्रित कहा है, अन्य सभी जीव आश्रित हैं। आश्रित को भय नहीं होता। कौवे आदि सभी पंछीओं को है कोई दुःख? जो जंगल में घूमते हैं, सियार आदि को कोई दुःख नहीं है। केवल इन मनुष्यों का जिन्होंने संग किया है ऐसे कुत्ते, गाय आदि सभी दुःखी होते हैं। ये मनुष्य तो मूल से दुःखी है और उनके संग में जो आते हैं वे सभी दुःखी होते हैं।

मनुष्य नासमझी के कारण दुःखी हैं, समझदारी लेने गया इसलिए दुःखी है। यदि समझदारी लेने नहीं गया होता तो यह नासमझी पैदा नहीं होती। सारा दुःख नासमझी का परिणाम है। खुद मन में ऐसा समझता है कि, 'मैंने यह जानाँ, वह जानाँ।' अरे! क्या जानाँ तूने? जानने के बावजूद पत्नी के साथ झगड़ना तो बंद होता नहीं है। कभी पत्नी के साथ लड़ाई हो जाती है तब उसका निकाल करना तो तुझे आता नहीं है, पंद्रह दिनों तक तो मुँह फुला होता है। कहेगा, 'कैसे निकाल करूँ?' जिसे पत्नी के साथ हुई तकरार का निकाल करना नहीं आता वह धर्म में भी क्या समझनेवाला है? पड़ोसी के साथ हुई तकरार का निकाल करना नहीं आए, वह किस काम का? तकरार का निकाल करना तो आना चाहिए न?

मनुष्यों को आज किसी तरह का भान नहीं रहा है। मोक्ष का भान नहीं रहा उसमें हर्ज नहीं है। मोक्ष का भान तो नहीं होता है, पहले से ही नहीं था, लेकिन संसारिक हिताहित का भान तो होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? 'संसार में मेरा कैसे हित हो और कैसे अहित होता है' इतना भान तो होना चाहिए या नहीं होना चाहिए?

इसे मनुष्यपन कैसे कहा जाए? मनुष्यपन तो वह कहलाए कि जैसे बारह महीने में दिवाली एक बार ही आती है लेकिन उसके प्रतिघोष लाभपंचमी तक रहते हैं, वैसे पूरे साल में बहुत हुआ तो पाँच दिन आफ़त आए और दूसरे दिन सामान्य रूप से अच्छे गुज़रें। मगर यह तो रोज़ आफ़त, बिना आफ़त का कोई दिन ही नहीं।

मोक्ष के हाईवे पर रहें हम

ऐसे सीधे रास्ते भी हैं और उलटे रास्ते भी हैं मगर हाईवे की बात ही अलग है। हाईवे के उपरांत दूसरे बहुत रास्ते होते हैं सब। घर में बीवी-बच्चे सब होते हैं, फिर भी क्लेश नहीं होता है, ऐसा हो तो जानना कि हम हाईवे पर हैं, वर्ना आड़े रास्ते पर

हैं। रास्ते अनेक हैं, लेकिन उसका कुछ लेवल तो होना चाहिए न। हमें हाईवे पर रहना है।

क्लेश नहीं रहे वह सच्चा धर्म

जहाँ क्लेश नहीं है वहाँ यथार्थ जैन, यथार्थ वैष्णव, यथार्थ शिवधर्म है। जहाँ धर्म की यथार्थता है वहाँ क्लेश नहीं होता है। यदि घर-घर में क्लेश हो रहे हैं, तो वे धर्म कहाँ गए? संसार चलाने के लिए जो धर्म चाहिए कि क्या करने से क्लेश नहीं होता, इतना ही यदि आ जाए तो भी धर्म प्राप्त हुआ कहलाए। क्लेश रहित जीवन जीना यही धर्म है। हिंदुस्तान में यहाँ संसार में ही खुद का घर स्वर्ग समान होना चाहिए तो स्वर्ग के नज़दीक का तो होना चाहिए न? क्लेश रहित होना चाहिए। इसलिए शास्त्रकारों ने कहा है कि जहाँ किंचित् मात्र क्लेश है वहाँ धर्म नहीं है। जेल की अवस्था हो वहाँ 'डिप्रेशन' नहीं और महल की अवस्था हो वहाँ 'एलिवेशन' नहीं, ऐसा होना चाहिए। क्लेश रहित जीवन हुआ मतलब मोक्ष के नज़दीक आया, यानी इस जन्म में सुखी होगा ही। हरएक को मोक्ष चाहिए। क्योंकि बंधन किसी को पसंद नहीं है। मगर क्लेश रहित हुआ तो जानना कि अब हमारा मोक्ष का स्टेशन नज़दीक ही है।

मुझे तो जब से 'ज्ञान' हुआ है तब से बीस साल से क्लेश ही नहीं है। मगर उसके पहले भी क्लेश नहीं था। मैंने पहले से, किसी भी रास्ते, क्लेश को निकाल बाहर किया था। क्लेश करने जैसा यह जगत् नहीं है।

'माय फ़ैमिलि' वहाँ झँझट काहे की

मेरे घर पर भी हीराबा (धर्मपत्नी) हैं, उनके साथ मतभेद कम हो गए हैं सारे, समझों बंद ही हो गए हैं। क्योंकि 'माय फ़ैमिलि' कहना सीखा। दिस इज़ माय फ़ैमिलि (यह मेरा परिवार है)। तब मैंने कहा, 'माय फ़ैमिलि का अर्थ क्या हुआ?' तब कहे, 'वहाँ तो झँझट होती नहीं, विचारभेद होता है मगर झँझट नहीं होती, क्लेश तो होता ही नहीं।' यदि दख़ल करना चाहें तो बाहरवालों के साथ जाकर कर आइए, फ़ैमिलि में ऐसा नहीं होता। यह वन फ़ैमिलि (एक जुट परिवार) कहलाए इसलिए कल से आप दख़ल बंद कर दीजिए, वह भी आपके साथ बंद कर देगी।

परिवार किसे कहा जाए?

फ़ैमिलि यानी क्या? फ़ैमिलि में कहीं ज़रा-सा भी क्लेश नहीं हो उसे फ़ैमिलि कहा जाए और हमारे लोग तो सारे फ़ैमिलि में ही कचरघान कर देते हैं। फ़ैमिलि मतलब फ़ैमिलि, उसमें कोई मनुष्य किसी की कोई भूल नहीं निकालता।

हमारे घर की बात घर में ही रहे ऐसा फ़ैमिलि के तौर पर जीवन जीना चाहिए। इतना फेरफार करें तो बहुत अच्छा कहलाए। क्लेश तो होना ही नहीं चाहिए। घर में जितने रुपये आए उतने में गुज़ारा कर लेना। और बहनों, यदि पैसों की सहूलियत नहीं हो तो आप साडिओं के लिए जल्दी मत करना। आपको भी सोचना चाहिए कि पति को अड़चन है तो उसे मुसीबत में नहीं डालना चाहिए। पैसों की छूट रही तो खर्च करना। मतलब ये जो सारे झगड़े पैदा होते हैं वे पागलपन के हैं, मेडनेस है केवल। थोड़ा वाइल्डनेस (जंगलीपन) कहलाए, वह नहीं होना चाहिए। हमें शोभा नहीं देता। कितने संस्कारी माता-पिता की संतानें हैं आप! संस्कारी देश के, आर्य प्रदेश के। हमें यह शोभा नहीं देता। और जिस भूल से सामनेवाला अवगत नहीं हो वह हमें बतलानी चाहिए कि 'ऐसा इस प्रकार यह नहीं होना चाहिए।' ताकि ज्यादातर ये झगड़े सारे बंद हो जाएँ।

तब आए दुनिया से निबेड़ा

क्लेश और कलह को लेकर यह दुनिया खड़ी

रही है। यदि हमारे घर में से वह कलह और क्लेश बंद हो जाए तो फिर दुनिया का कुछ निबेड़ा आ जाए। क्लेश-कलह के बारे में हमारे कई महात्माओं के घर में तलाश की, सबको पूछा, तब वे कहें कि हमारे यहाँ अब क्लेश-कलह नहीं रहा है। थोड़ा-बहुत जो शेष प्रज्वलित होता है उसे सुलगने से पहले ही बुझा देते हैं। किसी को पता नहीं चलता कि ऐसा हो गया है!

महीनेभर में यदि दो ही दिन क्लेश होता है तब भी बहुत हो गया। दुनिया में क्लेश-कलह नहीं होना चाहिए। हम बाहर जाकर पूछें तो बिना क्लेश-कलह के हमारे महात्माओं के कई घर निकल आएँगे।

क्लेश का अभाव, सहज भाव से

प्रश्नकर्ता : जिसने 'ज्ञान' नहीं लिया हो, उसके यहाँ भी क्लेश नहीं होता है तो वह क्या कहलाए?

दादाश्री : वह देव समान कहलाए, मगर ऐसा इस काल में संभव नहीं है। क्योंकि जो क्लेश है न, वह छूत के रोग की तरह असर करता है। छूत का रोग कैसे असर करता है! क्लेश तो घर-घर में प्रवेश कर गया है।

प्रश्नकर्ता : 'ज्ञान' नहीं लिया हो और उसके यहाँ जो क्लेश का अभाव होता है और यहाँ 'ज्ञान' लेने के बाद जो क्लेश का अभाव होता है, उन दोनों में क्या अंतर है?

दादाश्री : पहले में जो क्लेश का अभाव था वह हम बुद्धिपूर्वक करते थे और ज्ञान के बाद यह सहज भाव से रहता है, पहलेवाला कर्त्तापन छूट जाता है।

एडजस्ट होकर लाइए निपटारा

हम यह सरल और सीधा रास्ता बतला देते हैं और यह टकराव कोई रोज़-रोज़ थोड़े ही होता है? वह तो जब हमारे कर्म का उदय होता है तब होता है और उसी मात्रा में हमें 'एडजस्ट' होना है। घर में पत्नी के साथ झगड़ा हो गया तो उसके बाद उसे हॉटेल में ले जाकर, खाना खिलाकर खुश कर देना। अब ताँता नहीं रहना चाहिए।

जगत् की कोई भी वस्तु हमें फिट नहीं होती है। हम उसे फिट हो जाएँ तो दुनिया बहुत अच्छी है और उसे फिट करने जाएँ तो दुनिया टेढ़ी है इसलिए एडजस्ट एवरीव्हेर। हम उसके साथ फिट हो जाएँ तो हर्ज नहीं है।

लीजिए प्रार्थना का एडजस्टमेन्ट

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले को समझाने का मैंने पुरुषार्थ किया, फिर वह समझे-नहीं समझे वह उसका पुरुषार्थ?

दादाश्री : हम उसे समझा सकें उतनी ही जिम्मेदारी हमारी है फिर वह नहीं समझे तो उसका उपाय नहीं है। फिर हमें इतना कहना है कि, 'दादा भगवान! इनको सद्बुद्धि देना।' इतना कहना चाहिए। वर्ना आखिर में तो प्रार्थना का एडजस्टमेन्ट है ही।

किसी को अपनी दृष्टि से नहीं चला सकते

प्रश्नकर्ता : नज़दीकी फाइल और चिकनी फाइल वे सभी क्लेइमवाली कहलाएँ?

दादाश्री : चिकनी फाइलें सभी, खुद की भूलें हैं वे।

प्रश्नकर्ता : वह कौन-सी भूल?

दादाश्री : मनुष्य जितना परायों के साथ नोबल रहता है, ऑपन माइन्डेड रहता है, उतना ऑपन माइन्डेड यहाँ नहीं रहता है। इसलिए मैंने

फिर खोजबीन की थी, और इसलिए मैं ऑपन माइन्ड रखकर ही चला था। इसलिए मुझे इसके साथ भी रास आए और उसके साथ भी रास आए। यह तो ऑपन माइन्ड रखकर चलते नहीं है, मन में ऐसा होता है कि 'मैं उसका सब सीधा कर दूँ', ऐसे नहीं चलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, दादाजी, ऐसा ही है।

दादाश्री : 'अपनी दृष्टि से चलाना है उसे, वह जिस दृष्टि से चलता है ऐसे नहीं चलने देना।' ऐसा करना वह वीतराग मत के विरुद्ध है। जो अपनी दृष्टि से दूसरों को चलवाते हैं, वे वीतरागों के विरोधी कहलाएँ।

प्रश्नकर्ता : खटका लगे ऐसा वाक्य है कि 'ऐसा करके आप वीतरागों के विरोधी बनते हैं।'

दादाश्री : है ही विरोधी, इसलिए ही दु:ख है न? कुछ भी बदलता नहीं। टूट जाए वहाँ तक खींचते रहें, उतना ही। कुछ जो सयाने होते हैं वे कहेंगे, 'अरे, टूटने पर गाँठ लगा देना।' उसके बजाय हम टूटने ही नहीं दें तो उसमें क्या गलत है! फिर वे गाँठ लगाना नहीं समझें। टूटने के बाद गाँठ लगानी, उसके बजाय सयाने हो जाइए न!

प्रकृति खाली हो उसमें दोष किसका?

प्रश्नकर्ता : कोई बार ऐसा कुछ हो जाए तो समझाने हेतु कुछ कहना या नहीं?

दादाश्री : जाने दीजिए न, परायों को समझाने निकले हैं! क्या ये हमारे विद्यार्थी हैं? ये तो राग-द्वेष के हिसाब वसूल करने आए हैं। मतलब कुछ कहने की इच्छा ही मत करना। ये विद्यार्थी नहीं हैं। विद्यार्थी कौन कहलाए कि जिन्हें हम सिखलाएँ, डाँटे तो वे स्वीकार करें। ये तो जबान लड़ाते हैं, तब जाने दीजिए न, उसमें क्या कमाई करनी है?

मैं कभी किसी को डाँटता हूँ?

प्रश्नकर्ता : नहीं डाँटते।

दादाश्री : सभी आड़े-टेढ़े नहीं होते हैं क्या? मेरे कहने के अनुसार ही चलें? मेरी धारणा के अनुसार कोई चलता होगा क्या? सब अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार चलते हैं।

खुलासे पाकर काम निकाल लीजिए

प्रश्नकर्ता : दादाजी, जब से आपके पास आया हूँ तब से आप मुझे एक शब्दकोश के समान ही दिखाई देते हैं। डिक्शनरी समान ही होते हैं! जब कभी हम उलझ जाएँ तब आपके पास पूछने आएँ कि तुरंत ही उसका खुलासा कर देते हैं।

दादाश्री : मैंने सारे खुलासे, सारा दर्शन प्राप्त किया है। चौबीस तीर्थंकरों का इकट्ठा दर्शन प्राप्त किया है। जिसकी जो उलझन होगी उसका खुलासा तुरंत मिलेगा। उसका ज्ञान पूर्णता से नहीं हुआ है लेकिन दर्शन तो है ही। समझ में आ गया है। कैवल्यज्ञान समझ में आ गया है। अनुभव में नहीं आया है तब तक मैं भी 'दादा भगवान, दादा भगवान' करता रहता हूँ। क्योंकि वह समझ में आया नहीं है न!

यह ऊँचे से ऊँची, इतनी कुशलता यदि आ जाए जगत् में, इतना सयानापन छा जाए न, तो जगत् के लोगों का काम बन जाए!

जय सच्चिदानंद

नई प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें

(१) आप्तवाणी-१ (२) समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य (३) मानवधर्म (४) मृत्यु समय, पहले और पश्चात् (५) दान (६) सेवा-परोपकार - ये पुस्तकें पाने के लिए (079) 39830034, 09924343805 पर संपर्क करें.

दादावाणी

परम पूज्य दादाश्री बोधित आप्तसूत्र

- यदि तुझे मोक्षपथ पर विचरना (जाना) हो तो तुझे कुछ भी नहीं करना है और संसार में भटकना हो तो सब कुछ करना है।
- नासमझी से संसार और समझदारी से संसार का विनाश। ज्ञानी पुरुष हर तरह की समझदारी दे दें, उसके बाद शास्त्र पढ़ने नहीं पड़ते।
- 'ज्ञान' की माता कौन? समझ। वह समझ कहाँ से प्राप्त होगी? 'ज्ञानी' के पास।
- क्रिया लाख अवतार करने पर भी कोई परिणाम नहीं आनेवाला। 'परम विनय' से मोक्ष है।
- 'परम विनय' माने क्या? जिसने किंचित्मात्र किसी की 'विराधना' नहीं की है, जहाँ वाद नहीं होता, विवाद नहीं होता, कायदा नहीं होता, वहाँ 'परम विनय' है। कायदा है वह बंधन है।
- यह जगत् एक संग्रहालय है। संग्रहालय में देखो और जानो, खाओ, पीओ मगर अंदर से कुछ लेकर मत जाना। ममता मत करना। भुगतना सब कुछ, पर यदि बहार कुछ साथ ले जाओगे तो फिर संग्रहालय में वापस लौटना पड़ेगा।
- 'ज्यों है त्यों' के बजाय उलटा दिखाई दे उसका नाम जगत्।
- दो वस्तुएँ हैं जगत् में; अहम् पोसना या भग्न करना। इस जगत में सभी का अहम् या तो पोसा जाता है या भग्न होता है। दो के अलावा तीसरा कुछ होता नहीं है।
- जगत् बिना काम का नहीं है मगर काम लेना आना चाहिए। क्योंकि सभी भगवान है, अलग-अलग काम लेकर बैठे हैं, इसलिए जगत् में ना पसंद कुछ मत रखना।
- भगवान न्यायस्वरूप नहीं है और भगवान अन्यायस्वरूप भी नहीं है। किसी को दुःख नहीं हो वही भगवान की भाषा है। न्याय-अन्याय तो लोकभाषा है।
- अज्ञान का स्वीकार वही सच्चा ज्ञानमार्ग।

भोपाल में पहली बार आयोजित हिन्दी सत्संग शिविर सफल रहा

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई देसाई के सांनिध्य में पहली बार भोपाल में आयोजित तीन दिन का हिन्दी शिविर अति प्रभावशाली रहा। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, छत्तीस गढ, दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, गुजरात और अन्य कई राज्यों से भी नये मुमुक्षु और आत्मज्ञान लिए हुए महात्मा पधारें। हंग्री देश का एक विदेशी मुमुक्षु भी आत्मज्ञान पाने के लिए आया। केम्पिअन स्कूल के केम्पस में आयोजित सुबह-शाम के सत्संग दौरान बहुत सारे अध्यात्म तथा व्यावहारिक समस्याओं संबंधी प्रश्नों की बौछार रही। पूज्य दीपकभाई ने सभी प्रश्नों के सुंदर समाधान लोगों को दिए। कड़ी ठंड के बावजूद सभी मुमुक्षुओं में अनोखा उल्लास आत्मज्ञान पाने के लिए देखा गया। स्थानिक भोपालवासी लोगों ने भी उत्साहपूर्वक इस शिविर में भाग लिया, विशेष तौर पर युवक-युवतियों ने। स्थानिक महात्माओं के द्वारा विभिन्न जगहों से पधारे मुमुक्षु-महात्माओं के लिए रहने और खाने की अच्छी व्यवस्था की गई और सभी महात्माओं ने उमंग के साथ मिल-झूलकर सेवा का अच्छा योगदान दिया। ज्ञानविधि में ९०० नये मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान पाया। परम पूज्य दादा भगवान प्ररूपित तीन हिन्दी किताबों - दान, सेवा-परोपकार और मृत्यु समय, पहले और पश्चात्... का विमोचन भी पूज्य दीपकभाई के करकमलों से हुआ। इस तरह भोपाल में सत्संग शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

Atmagnani Pujya Deepakbhai's UK Satsang Schedule 2010

Date	Day	Time	Event	Venue
24 Mar 10	Wednesday	7:30 - 10:00 PM	P.Deepakbhai's Satsang	Oshwal Centre, Coopers Lane Road, Narthaw, Potters Bar - EN6 4DG
25 Mar 10	Thursday	6:00 - 10:00 PM	**GNAN VIDHI**	
26 Mar 10	Friday	7:30 - 10:00 PM	P.Deepakbhai's Satsang	Brent Town Hall, Forty lane, Wembley, HA9 9HD
27 Mar 10	Saturday	7:30 - 10:00 PM	P.Deepakbhai's Satsang	
28 Mar 10	Sunday	6:00 - 10:00 PM	**GNAN VIDHI**	
30 Mar 10	Tuesday	7:30 - 10:00 PM	P.Deepakbhai's Satsang	Kingbury High School, Stag Lane, Kingsbury, London,NW9 9AT
31 Mar 10	Wednesday	6:00 - 10:00 PM	**ENGLISH GNANVIDHI**	
02 Apr 10	Friday	Shibir timing details to be advised nearer the time.	MAHATMA SHIBIR Contact Prajay Shah for bookings on +44 7956476253 or iowshibir10@ymail.com	Little Canada, PGL Centre, New Road, Wootton Bridge, Ryde, Isle of Wight, PO33 4JP
03 Apr 10	Saturday			
04 Apr 10	Sunday			
05 Apr 10	Monday			
06 Apr 10	Tuesday			
08 Apr 10	Thursday	7:30 - 10:00 PM	P.Deepakbhai's Satsang	Wanza Community Centre, 31 Pasture Lane, Leicester, LE1 4EY
09 Apr 10	Friday	7:30 - 10:00 PM	P.Deepakbhai's Satsang	
10 Apr 10	Saturday	6:00 - 10:00 PM	**GNAN VIDHI**	
11 Apr 10	Sunday	7:30 - 10:00 PM	P.Deepakbhai's Satsang	
12 Apr 10	Monday	7:30 - 10:00 PM	Aptaputra Satsang	Northampton Academy, Wellingborough Road, Northampton, NN3 8NH
13 Apr 10	Tuesday	6:00 - 10:00 PM	**GNAN VIDHI**	
14 Apr 10	Wednesday	7:30 - 10:00 PM	Aptaputra Satsang	Hindu Community Centre, 541A Warwick Road, Tyseley, Birmingham, B11 2JP
15 Apr 10	Thursday	6:00 - 10:00 PM	**GNAN VIDHI**	
16 Apr 10	Friday	7:30 - 10:00 PM	Aptaputra Satsang	Bishop Gore School, Sketty, Swansea, SA2 9AP
17 Apr 10	Saturday	7:30 - 10:00 PM	P.Deepakbhai's Satsang	
18 Apr 10	Sunday	3:00 - 7:00 PM	**GNAN VIDHI**	
29 Jul 10	Thursday	7:30 - 10:00 PM	P.Deepakbhai's Satsang	Wanza Community Centre, 31 Pasture Lane, Leicester, LE1 4EY
30 Jul 10	Friday	7:30 - 10:00 PM	P.Deepakbhai's Satsang	
31 Jul 10	Saturday	6:00 - 10:00 PM	**GNAN VIDHI**	
01 Aug 10	Sunday	9:00 AM - 8:00 PM	**GURUPURNIMA**	

Contact Persons : London : Varshaben Shah : 07956476253, 02084273374
Isle of Wight : Prajay Shah : 07956476253
Leicester : Trushaben Nathwani : 01162208081; Kaushikbhai Bhayani : 01162682854
Northampton : Narendrabhai Shah : 01604471933, 07967813499
Birmingham : Narendrabhai Parmar : 01217442570, 07825373284
Swansea : Vilasben Kareemjee : 07969590044, 01267238775

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

भरुच (गुजरात)

२० फरवरी, शाम ७-३० से १० - **सत्संग** और **२१ फरवरी** (रवि), शाम ६-३० से १० - **ज्ञानविधि**
स्थल : होस्टेल ग्राउन्ड, सेवाश्रम रोड, पांच बत्ती, **भरुच. संपर्क :** 9428326972

पाटण (गुजरात)

२७ फरवरी, रात ८ से १०-३० - **सत्संग** और **२८ फरवरी** (रवि), शाम ७-३० से ११ - **ज्ञानविधि**
स्थल : प्रगति मेदान, बी.एम. हाइस्कूल के सामने, गुंगडी रोड, पाटण. **संपर्क :** 9428756442

अडालज त्रिमंदिर

१९ मार्च, शाम ४-३० से रात १०-३० - पूज्य नीरूमाँ की चौथी पुण्यतिथि के अवसर पर सत्संग-भक्ति
२० मार्च, शाम ४-३० से ६-३० - **सत्संग** और **२१ मार्च** (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**

पालीताणा में सत्संग शिविर और यात्रा - दि. ३ से ६ मई २०१०

पालीताणा (जि. भावनगर, गुजरात) में चार दिनों के लिए पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में यात्रा तथा सत्संग शिविर का आयोजन किया गया है। सत्संग सामान्यतया गुजराती भाषा में होगा। इस शिविर के लिए रजिस्ट्रेशन 1 मार्च से 15 मार्च 2010 दौरान होगा। यह शिविर-यात्रा के लिए निर्धारित शुल्क देने पर ही आपका रजिस्ट्रेशन होगा और केवल रजिस्ट्रेशन किए हुए महात्माओं को ही प्रवेश मिलेगा। आपका रजिस्ट्रेशन अपने नजदीकी सत्संग सेन्टर पर या अडालज (079) 39830400 नंबर पर करवाएँ।

अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - दि. ३ से ६ जून २०१० (अधिक जानकारी अगले अंक में)

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत ✦ **'संस्कार'** पर हर रोज़ रात ८-३० से ९ (हिन्दी में)
✦ **'आस्था'** पर हर रोज़ शाम ६-३० से ७ (हिन्दी में)
✦ **'सह्याद्रि' दूरदर्शन मराठी** पर सुबह ७-३० से ८ (सोम, मंगल, गुरु, शनि) तथा सुबह ७-१५ से ७-३० (बुध, शुक्र) - (मराठी में)
✦ गुजरात में **'दूरदर्शन'** पर हर रोज़ दोपहर ३-३० से ४ (अन्य राज्यों में डीडी-गुजराती पर उसी समय)
✦ **'दूरदर्शन - डीडी-गुजराती'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)

USA ✦ 'TV Asia' पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)

USA-UK ✦ **'Aastha International'** पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)

Africa ✦ **'Aastha International'** पर हर रोज़ सुबह १०-३० से ११ (गुजराती में)

✦ **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) **सोनी टीवी** पर (सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत ✦ **'झी जागरण'** पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (हिन्दी में)
✦ **'दूरदर्शन'** डीडी-गुजराती पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)

U.S.A. ✦ **'SAHARA ONE'** पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)

UK-Europe ✦ **'MA TV' Mon to Thu 6-30 to 7 PM & Fri to Sun 4-30 to 5 PM** (गुजराती में)

USA-UK ✦ **'Aastha International'** पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

Africa ✦ **'Aastha International'** पर हर रोज़ रात १२ से १२-३० (गुजराती में)

फरवरी २०१०
वर्ष - ५, अंक - ४
अखंड क्रमांक - ५२

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

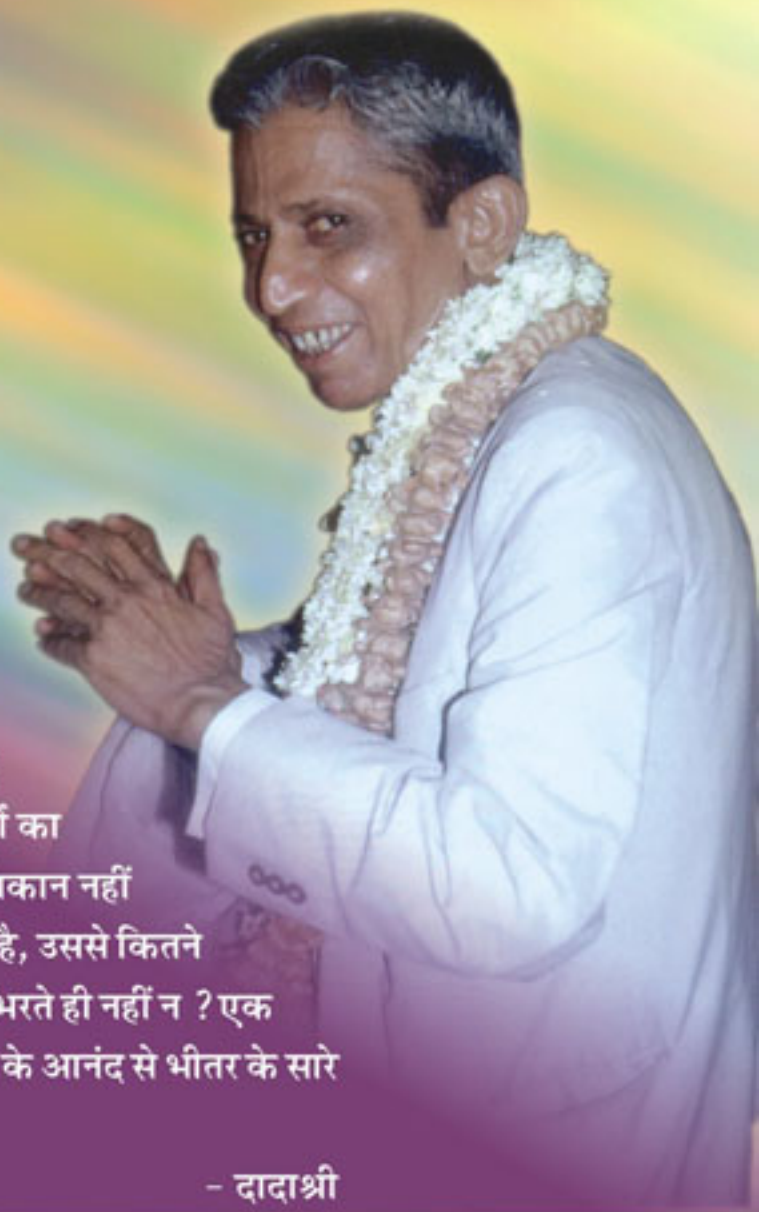

अनंत अवतार के घाव भरें, आत्मा के सच्चे आनंद से !

यह (अक्रम विज्ञान) तो 'वर्ल्ड' का अजुबा है! इसके कारण यहाँ सबकी अंदरूनी जलन बंद हो गई है और आत्मा का आनंद उत्पन्न हुआ है। क्रोध-मान-माया-लोभ की गैरहाजिरी वही आनंद! संसारी आनंद आता है वह मूर्छा का आनंद है। जगत ने आनंद देखा ही नहीं है। आनंद में थकान नहीं होती, ऊब नहीं होती। यहाँ पर सच्चा आनंद प्राप्त होता है, उससे कितने ही अवतारों से पड़े घाव भर जाते हैं। संसार के घाव तो भरते ही नहीं न ? एक घाव भरने लगा वहाँ दूसरे पाँच घाव हुए होते हैं। आत्मा के आनंद से भीतर के सारे घाव भर जाते हैं, इससे मुक्ति बर्तती है!

- दादाश्री

Publisher & Editor Mr. Deepakbhai Desai on behalf of Mahavideh Foundation Printed at **Mahavideh Foundation Printing Press** :- Parshvanath Chembers, Income Tax, Ahmedabad-14 and published.

Printed by Mahavideh Foundation - (079) 27542964,27540216